हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

गिरिराज

साप्ताहिक

ISSN 2454-9738

डाक पंजीकरण संख्या
एच.पी./42/एस.एम.एल. 2018-2020
साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

इस अंक में
हिमाचल दिवस पर मुख्यमंत्री का आलेख- 6-7

वर्ष 43 अंक 29 शिमला, 21 अप्रैल, 2021 हर बुधवार को प्रकाशित मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपये वार्षिक 250 रुपये आजीवन 2500 रुपये website:himachalpr.gov.in/giriraj.asp

प्रदेश भर में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया 74वां हिमाचल दिवस समारोह

कोरोना वॉरियर्स को मिलेगा दो माह का अतिरिक्त मानदेय

कोरोना संक्रमित मरीजों की देखभाल में निरन्तर सेवारत प्रदेश के फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं जैसे कि वार्ड सिस्टर्ज, स्टाफ नर्सों, वार्ड ब्यॉज, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों और आशा कार्यकर्ता आदि ऐसे तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को अप्रैल एवं मई माह के लिए 1500 रुपये प्रतिमाह की दर से अनुग्रह अनुदान प्रदान किया जाएगा। यह घोषणा गत दिनों मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर ने मंडी में राज्य स्तरीय हिमाचल दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए की। उन्होंने कोविड-19 रोगियों की संख्या में वृद्धि के दृष्टिगत पर्यटन उद्योग पर पड़े प्रतिकूल प्रभाव को देखते हुए सबवेंशन योजना में तीन महीने की वृद्धि कर जून, 2021 तक बढ़ाने की भी घोषणा की। इसके अतिरिक्त, सभी होटलों, पर्यटक लॉजिज और पर्यटक इकाइयों के मांग शुल्क को दो महीनों के लिए स्थगित किया जाएगा तथा उनसे कोई विलम्ब अदायगी शुल्क नहीं वसूला जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि बाद में असान किस्तों पर भुगतान का प्रावधान किया जाएगा। डिमांड शुल्क के स्थगन की सुविधा प्रदेश के निजी स्कूलों को भी उपलब्ध होगी।

पुलिस थानों में स्थापित महिला हेल्प डेस्क के लिए मिले 136 दुपहिया वाहन

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि कोविड महामारी का दुष्प्रभाव परिवहन क्षेत्र पर भी पड़ा है। परिवहन व्यावसायियों के लिए भी सबवेंशन योजना तैयार की जाएगी ताकि उन्हें भी आसान शर्तों पर आर्थिक सहायता प्रदान की जा सके।

उन्होंने यह घोषणा भी की कि राज्य परिवहन में लगने वाले राज्य सड़क कर में अप्रैल से जून महीनों तक 50 प्रतिशत की छूट दी जाएगी। इसके अतिरिक्त, कन्ट्रेक्ट कैरिज और टैक्सियों आदि को भी यात्री कर में अप्रैल से जून तक तीन महीने के लिए 50 प्रतिशत की छूट रहेगी।

इससे पूर्व मुख्यमंत्री ने पुलिस और गृह रक्षा के जवानों की टुकड़ियों द्वारा प्रस्तुत मार्चपास्ट की सलामी ली और तिरंगे का अनावरण किया। परेड का नेतृत्व डीएसपी प्रणव चौहान ने किया।

मुख्यमंत्री ने पद्धर में आयोजित स्वर्णिम हिमाचल दिवस के कार्यक्रम के अवसर पर प्रदेश के सभी पुलिस थानों में स्थापित महिला हैल्प डैस्क के लिए 136 टू-व्हीलर्ज को भी हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर लोगों को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने स्वतंत्रता सैनानियों और महान धरती पुत्रों को श्रद्धांजलि अर्पित की जिन्होंने हिमाचल प्रदेश को एक अलग पहचान दिलाने के लिए कड़ी मेहनत की। उन्होंने प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री डा. यशवंत सिंह परमार को भी स्मरण किया जिन्होंने हिमाचल प्रदेश को विशेष दर्जा दिलाने के लिए आंदोलन को बड़ी दिशा दिखाई। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश ने अस्तित्व में आने के उपरान्त शून्य से अपनी विकास यात्रा आरम्भ की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश ने छोटा राज्य होने के बावजूद देश के बड़े राज्यों का मार्गदर्शन किया है, जिसका श्रेय प्रदेश के प्रत्येक व्यक्ति को जाता है। वर्तमान प्रदेश सरकार ने सत्ता में आने के उपरान्त मंत्रिमण्डल की पहली बैठक में ही वृद्धावस्था पेंशन पाने की आयु को बिना किसी आय सीमा के 80 वर्ष से घटाकर 70 वर्ष किया, जिससे प्रदेश के लाखों वृद्धजन लाभान्वित हुए। उन्होंने कहा कि प्रदेश के लोगों को घर-द्वार के निकट उनकी समस्याओं के समधान के लिए जनमंच कार्यक्रम वरदान साबित हो रहा है। अब तक उनकी समस्याओं के त्वरित समाधान प्रदान करने के लिए 200 जनमंच कार्य्रक्रम आयोजित किए जा चुके हैं।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री सेवा संकल्प हेल्पलाइन- 1100 के माध्यम से अब तक 1,51,83 शिकायतें मिली हैं जिनमें से 1 लाख 20 हजार शिकायतों का निवारण कर दिया गया है।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि केन्द्र सरकार की महत्त्वाकांक्षी प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के अन्तर्गत प्रदेश में अब तक 21.76 करोड़ रुपये व्यय कर 1.36 लाख परिवारों को निःशुल्क गैस कुनेक्शन वितरित किए गए हैं। प्रदेश सरकार द्वारा शुरु की गई हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना के अन्तर्गत 2.91 महिलाओं को (शेष पृष्ठ 11 पर)

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर हिमाचल दिवस के अवसर पर आयोजित परेड का निरीक्षण करते हुए।

- ✦ हिमाचल पहली से आठवीं कक्षा तक निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें देने वाला पहला राज्य
- ✦ कोरोना टीकाकरण अभियान में शामिल हों लोग
- ✦ पर्यटन इकाइयों के साथ प्रदेश के निजी स्कूलों का पानी-बिजली शुल्क दो माह के लिए स्थगित
- ✦ राज्य सड़क कर पर जून तक मिलेगी 50 प्रतिशत की छूट

द्रंग क्षेत्र में तीन वर्षों में 270 करोड़ की परियोजनाएं कार्यान्वित

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों मण्डी जिला के द्रंग विधानसभा क्षेत्र में लगभग 50 करोड़ रुपये की विकासात्मक परियोजनाओं के शिलान्यास व लोकार्पण किए। उन्होंने सिघाली-पराशर सड़क पर बग्गी नाला में 3.94 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित 45 मीटर पुल, तहसील पद्धर की ग्राम पंचायत चूकु के अन्तर्गत जनजातीय जनसंख्या के लिए 1.94 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित पेयजल योजना और ऊहल नदी से तुंग बिजान की आंशिक रूप से कवर बस्तियों तथा आस-पास के गांवों के लिए 2.68 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित उठाऊ पेयजल आपूर्ति योजना का उद्घाटन किया। श्री जय राम ठाकुर ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला साहल के लिए 1.75 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित होने वाले भवन, पराशर में 50 लाख रुपये की लागत से बनने वाले हैलीपैड, ऊहल नदी पर बरोट से मुलतान तक 53.62 लाख रुपये की लागत से निर्मित होने वाले 60 मीटर पैदल चलने योग्य पुल, पद्धर-हरडगलू सड़क पर रिगाद नाला पर 1.08 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित होने वाले आरसीसी टी-बीम पुल, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक (शेष पृष्ठ 11 पर)

आओ 'चलो चम्बा'

✍ विवेक शर्मा

प्राकृतिक संसाधनों व नैसर्गिक सौंदर्य से भरपूर हिमाचल आज देश के अग्रणी राज्यों में गिना जाता है। यह क्षेत्र सदा से ही कभी ऋषियों की साधना स्थली तो कभी यायावरों के कौतूहल का केंद्र रहा। छोटे पहाड़ी राज्य के रूप में पहचान हो या आज से पांच दशक पूर्व, वर्ष 1971 में मिले पूर्ण राज्यत्व का विशेषण हो, यहां की उत्तरोत्तर सरकारों ने प्रदेश का विकास करने के लिए भरसक प्रयास किए हैं। सांस्कृतिक रूप से समृद्ध यहां के हर जिले के अनेक ऐसे पहलू हैं, जिनके दोहन से राज्य में प्रगति के पहियों को गति मिलती है। चम्बा एक ऐसा ही अंचल है जिसका इतिहास उसे प्रदेश ही नहीं समूचे देश में अलग मुकाम का हकदार बनाता है। चम्बा, भरमौर, डलहौजी, खजियार, मणिमहेश आदि कुछ ऐसे स्थल हैं, जिन्हें सांस्कृतिक पर्यटन और साहसिक खेलों की दृष्टि से उभारा जा सकता है। इसी को मूर्त रूप देने के लिए सरकार ने 'चलो चम्बा' का उद्घोष कर चम्बा जिले में पर्यटन विकास की अपार संभावनाओं को अधिमान दिया है। यह कार्यक्रम तीन सी यानी क्राफ्ट (शिल्प), कल्चर (संस्कृति) (शेष पृष्ठ 11 पर)

वैक्सीन लगवाने के लिए लोगों को प्रेरित करने का आग्रह

कोविड-19 को लेकर समीक्षा बैठक

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने स्थानीय स्वास्थ्य और प्रशासनिक अधिकारियों को कोरोना के पांच से अधिक मामले वाले क्षेत्रों को मिनी कंटेनमेंट जोन घोषित करने के निर्देश दिए। कोरोना परीक्षण की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए और लोगों को वैक्सीन लगवाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। उन्होंने स्थानीय निकायों और स्वयंसेवी संस्थाओं से लोगों को कोरोना के बढ़ रहे मामलों के बारे में जागरूक करने में प्रदेश सरकार की सहायता करने का आग्रह किया। मुख्यमंत्री गत दिनों कांगड़ा और चंबा जिलों में कोविड-19 महामारी में हुई बढ़ोतरी पर समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि दोनों जिलों में सक्रिय मामलों की संख्या बढ़ रही है और होम आईसोलेशन के तहत व्यक्तियों की नियमित रूप से निगरानी की जानी चाहिए। उनका मनोबल बढ़ाने के लिए उनका उचित (शेष पृष्ठ 11 पर)

हिमाचल दिवस के पावन अवसर पर

प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई

प्यारे प्रदेशवासियो

बीते इन वर्षों में
गांव-गांव शहर-शहर
समृद्धि और खुशहाली आई
समाज के सभी वर्गों का
सरकार ने रखा खास ख्याल
स्वास्थ्य सेवाओं का हुआ विस्तार
गुणात्मक शिक्षा भी हुई सुनिश्चित
कृषि बागवानी ने किया खुशहाल
लगे उद्योग मिला रोज़गार
पर्यटन को लगे नए पंख
युवाओं के सपनों को मिली उड़ान
बढ़ी पारदर्शिता बढ़ा विश्वास
सबने मिलकर साथ-साथ
हिमाचल का देश दुनिया में बढ़ाया मान

-जय राम ठाकुर, मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश

www.himachalpr.gov.in HimachalPradeshGovtIPRDept DPR Himachal dprhp

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा जारी

कोरोना से लड़ने में पंचायती राज संस्थाएं सक्रिय भूमिका निभाएं : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों मंडी से प्रदेश में तीन स्तरीय पंचायती राज संस्थाओं के तीन हजार से अधिक प्रतिनिधियों से वर्चुअली बातचीत की। उन्होंने कहा कि सभी निर्वाचित प्रतिनिधियों को आम जन और स्वास्थ्य विभाग के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करके अपने-अपने क्षेत्रों में कोरोना महामारी से लड़ने के लिए राज्य सरकार की मदद करने में एक सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि देश, दुनिया और राज्य कोरोना महामारी के कठिन दौर से गुजर रहे हैं इसलिए इस वायरस से लड़ने में सरकार का सहयोग करना हम सब का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि गत वर्ष पंचायती राज संस्थाओं के सभी निर्वाचित प्रतिनिधियों ने कोरोना महामारी की पहली लहर के दौरान इस वायरस से निपटने में अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने न केवल फेस मास्क और हैंड सेनीटाइजर बल्कि जरूरतमंदों को राशन और खाने के पैकेट भी वितरित किए।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि निर्वाचित प्रतिनिधियों को राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर जारी की गई मानक संचालन प्रक्रियाओं का कड़ाई से पालन करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए आगे आना चाहिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि देश में सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान चल रहा है। उन्होंने लोगों से टीकाकरण के लिए आगे आने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि निर्वाचित प्रतिनिधियों को होम आइसोलेशन में रह रहे मरीजों की मदद और उनके परिवार के सदस्यों के साथ निरन्तर सम्पर्क में रहना चाहिए। इससे मरीजों को इस वायरस से लड़ने के लिए प्रोत्साहित करने में सहायता मिलेगी। उन्होंने कहा कि पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधियों को होम क्वारंटीन में रह रहे लोगों को इस वायरस को उनके परिवारों के अन्य सदस्यों में फैलने से रोकने के लिए सभी आवश्यक उपाय अपनाने के लिए भी प्रेरित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि होम क्वारंटीन में रह रहे व्यक्तियों को अन्य परिवारजनों द्वारा प्रयोग किए जा रहे शौचालय का उपयोग नहीं करना चाहिए और प्रतिनिधियों को मरीजों के लिए अलग शौचालय का प्रबन्ध करना चाहिए।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधियों को लोगों को टीकाकरण करवाने के लिए प्रेरित करना चाहिए और बड़े स्तर पर टीकाकरण के भी प्रबन्ध करने चाहिए। उन्होंने कहा कि पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधियों को सुनिश्चित करना चाहिए कि लोग प्रदेश सरकार द्वारा मन्दिरों और विवाह जैसे आयोजनों के संबंध में जारी की गई मानक संचालन प्रक्रियाओं का पालन करें। उन्होंने कहा कि पंचायती राज संस्थाओं के सदस्यों को बीमारी से पीड़ित वृद्धजनों को सार्वजनिक स्थलों पर न जाने के लिए प्रेरित करने को कहा क्योंकि यह महामारी उनके लिए अधिक जानलेवा है। ऐसे लोगों को जितना हो सके घर से बाहर कम से कम निकलना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधियों को बाहरी राज्यों से आ रहे लोगों विशेषकर उन राज्यों जहां इस महामारी का प्रकोप अधिक है, पर निरन्तर निगरानी रखनी चाहिए।

स्वास्थ्य अधोसंरचना के विकास पर विशेष ध्यान देना जरूरी

कोविड मामलों में तेजी से हो रही वृद्धि के दृष्टिगत राज्य में स्वास्थ्य अधोसंरचना के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। यह बात मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों मंडी में मंडी व कुल्लू जिलों की कोविड-19 स्थिति की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए कही। श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि भंगरोटू और मदर चाईल्ड अस्पताल मंडी में बनने वाले प्री-फैब्रिकेटिड अस्पताल का कार्य जल्द शीघ्र पूरा किया जाना चाहिए ताकि जिला में ऑक्सीजन युक्त बेड क्षमता को बढ़ाया जा सके। उन्होंने कहा कि सवारियां निर्धारित संख्या में ही बिठाई जानी चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि जिला प्रशासन को यह सुनिश्चित करना चाहिए की सामाजिक समारोहों जैसे विवाह आदि के लिए निर्धारित अधिकतम संख्या का सख्ती से पालन किया जाए। उन्होंने कहा कि यदि आवश्यक हो तो उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाए। उन्होंने जिला प्रशासन को कोविड के मामले बढ़ने पर उपचार की मांग को पूरा करने के संबंध में पर्याप्त प्रबंधन सुनिश्चित करने को कहा। उन्होंने कहा कि लोगों को फेस मास्क और हैड सेनेटाईजर का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए और सार्वजनिक स्थानों पर भीड़भाड़ से बचना चाहिए। उन्होंने कहा कि मंदिरों और अन्य धार्मिक स्थानों पर भी नियमों का प्रभावी तरीके से पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि जिला कुल्लू एक प्रमुख पर्यटन गंतव्य है जहां प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में पर्यटक आते हैं। उन्होंने कहा कि जिले में आ रहे पर्यटकों द्वारा मानक संचालन प्रक्रिया का पालन सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी दिशा-निर्देशों को सख्ती से लागू कर उनका पालन किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद विभाग द्वारा होम आईसोलेशन में रह रहे मरीजों को काढ़ा उपलब्ध करवाया जाना चाहिए और काढ़े को सही तरीके से पीने के लिए उनका मार्गदर्शन भी किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि शहरी क्षेत्रों में सफाई कर्मियों द्वारा स्वच्छता अभियान भी चलाया जाना चाहिए। उन्होंने पुलिस विभाग को निर्देश दिए कि यह भी सुनिश्चित किया जाए कि पर्यटक मणिकर्ण, कसोल, मनाली इत्यादि पर्यटन स्थलों पर किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें।

परिवहन विभाग द्वारा बसों व अन्य सार्वजनिक परिवहन की प्रभावी सेनिटाइजेशन सुनिश्चित की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि दुकानदारों को भी यह सुनिश्चित करना चाहिए कि नो मास्क, नो सर्विस पॉलिसी का कड़ाई से पालन किया जाए। उन्होंने कहा कि निजी बस ऑपरेटरों द्वारा भी बसों की उचित सेनिटाईजेशन के साथ-साथ

मंडी व कुल्लू जिलों में कोविड-19 स्थिति की समीक्षा

हिमाचल में खुलेगा विंटर स्पोर्ट्स सेंटर

केंद्रीय खेल मंत्री श्री किरण रिजिजू ने कहा कि प्रदेश में विंटर स्पोर्ट्स ऑफ इंडिया की टीम प्रदेश की टीम के साथ संयुक्त निरीक्षण करेगी और विंटर स्पोर्ट्स सेंटर खोला जाएगा। यह बात उन्होंने गत दिनों पुलिस मैदान बारहगाह में चलो चंबा अभियान के तहत रैली ऑफ चंबा के समापन समारोह के अवसर पर कही। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि बर्फबारी वाले क्षेत्रों में विंटर स्पोर्ट्स जैसी साहसिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।

चंबा पहुंचे केंद्रीय मंत्री श्री रिजिजू ने कार रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने कहा कि हिमाचल में औषधीय पौधे लगाने और इनके व्यावसायिक इस्तेमाल को बढ़ावा दिया जाएगा। उन्होंने पर्यटन व्यवसाय को चंबा में विकसित करने के प्रशासनिक प्रयास 'चलो चंबा' की सराहना की। केंद्रीय खेल मंत्री ने बारगाह स्थित मैदान में बहुउद्देशीय कांप्लेक्स, विधान सभा क्षेत्र चंबा में ओपन जिम के लिए पचास लाख रुपये की राशि देने सहित भटियात, डलहौजी और भरमौर में ओपन जिम के लिए 25-25 लाख का सामान उपलब्ध करवाने की भी घोषणा की। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हिमालयी पश्चिमी छोर में आते धर्मशाला, चंबा, डलहौजी इत्यादि क्षेत्रों के दायरे में एक स्पोर्ट्स अकादमी खोली जाएगी। इस बारे में हिमाचल सरकार से बात की जाएगी। प्रदेश में शिलारू स्थित हाई ऑल्टीट्यूड ट्रेनिंग सेंटर को भी अपग्रेड किया जाएगा। इस अवसर पर बाइक रैली में पहले, दूसरे तथा तीसरे स्थान पर आए प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। रैली में देश के 15 राज्यों के 88 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

रैली ऑफ चंबा के समापन पर केंद्रीय मंत्री रिजिजू ने दी सौगात

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर मंडी व कुल्लू जिलों में कोविड-19 की स्थिति की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए

पेयजल योजना लोगों को समर्पित

खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले मंत्री श्री राजेन्द्र गर्ग ने घुमारवीं विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न विकासात्मक योजनाओं के उद्घाटन एवं शिलान्यास किए जिसमें लगभग 4.14 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित भराड़ी-लडयाणी-सुमाडी-चकराणा-बरोटा-मिहाड़ा उठाऊ पेयजल योजना के संवर्धन का उद्घाटन किया। इस योजना से गांव मिहाड़ा, दलोटे, डुमेहर, बरोटा, डुगबाण, लहोट, सुमाडी, लडयाणी इत्यादि गांवों के लगभग 8 हजार लोग लाभान्वित होंगे। उन्होंने जल जीवन मिशन के अंतर्गत हर घर नल से जल उपलब्ध करवाने हेतु घुमारवीं विधानसभा क्षेत्र की विभिन्न पेयजल योजनाओं के स्रोत स्तरीय संवर्धन की पट्टिका का अनावरण किया। इस योजना का शिलान्यास मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर द्वारा किया गया है। लगभग 53 करोड़ 32 लाख रुपये की लागत से बन रही इस योजना से लगभग 55 हजार 500 लोग लाभान्वित होंगे। इस योजना का 35 प्रतिशत कार्य पूर्ण कर लिया गया है। उन्होंने मिहाडा में लगभग 1.5 लाख रुपये से निर्मित सामुदायिक शेड का लोकार्पण किया। उन्होंने सम्पर्क मार्ग मिहाडा खिल्ल-दलोटे-कुवादड़े-लोहट सड़क को जीप योग्य से मोटर योग्य करने के कार्य का शुभारम्भ किया। उन्होंने राजकीय मिडल पाठशाला मिहाडा के सम्पर्क मार्ग का भी शुभारम्भ किया तथा राजकीय प्राथमिक पाठशाला मिहाडा प्री-नर्सरी कक्षा के कमरे का शुभारम्भ किया जिसमें प्री-नर्सरी के बच्चों के लिए आधुनिक तकनीक से क्लास रूम बनाया गया है जिसमें खेल-खेल में पढ़ाई के लिए विभिन्न खिलौने और उपकरण रखे गए है।

इस अवसर पर मिहाडा में जन सभा को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार के तीन वर्ष के कार्यकाल के दौरान मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर के कुशल नेतृत्व में घुमारवीं विधानसभा क्षेत्र में विकास के कार्यों ने निरंतर रफ्तार पकड़ी है। सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, विद्युत इत्यादि क्षेत्रों में तीव्र गति से विकास कार्य किए जा रहे है ताकि लोगों को घर-द्वार पर सभी मूलभूत सुविधाएं मुहैया करवाई जा सके।

उन्होंने कहा कि घुमारवीं विधानसभा क्षेत्र के लोगों को पानी की किल्लत न हो इसके लिए पाईप लाईन बिछानी और टैंकों के निर्माण का कार्य तीव्र गति से चला हुआ है। ताकि लोगों को सुचारू पीने का पानी मिल सके।

संस्कृत अकादमी का विक्रमी सम्वत् कलैण्डर जारी

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों शिमला में हिमाचल संस्कृत अकादमी का विक्रमी सम्वत् कैलेण्डर जारी किया।

मुख्यमंत्री ने अकादमी के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि हिन्दू नव वर्ष 13 अप्रैल से आरम्भ हो रहा है और यह कैलेण्डर भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं और भारतीय पौराणिक मान्यताओं पर आधारित है।

शिक्षा मंत्री श्री गोविन्द ठाकुर, उच्च शिक्षा निदेशक डॉ. अमरजीत शर्मा, अकादमी के सचिव डॉ. केशव नंद कौशल भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

सेंट बीड्स कॉलेज की शोध पत्रिका ज्ञानवर्धक एवं सूचनाप्रद : राज्यपाल

राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने सेंट बीड्स महाविद्यालय शिमला द्वारा प्रकाशित 12 वर्ष पुरानी पत्रिकाओं का नया संस्करण-जर्नल ऑफ रिसर्च द बीड ऐथेनियम गत दिनों राजभवन में जारी किया। यह सेंट बीड्स शिक्षा समिति शिमला का ऑफिशियल प्रकाशन है। पत्रिका के सम्पादकीय और सलाहकार बोर्ड के सभी सदस्यों के प्रयासों की सराहना करते हुए राज्यपाल ने कहा कि शोध पत्र और पत्रिका के विभिन्न विषय ज्ञानवर्धक होने के साथ सूचना के मुख्य स्रोत हैं। उन्होंने कहा कि यह विषय पाठ्कों के साथ-साथ शोधकर्ताओं के लिए भी लाभदायक साबित होंगे। उन्होंने उम्मीद जताई कि संपादकीय बोर्ड का प्रयास भविष्य में भी जारी रहेगा। उन्होंने पत्रिका में विद्यार्थियों के लेख भी शामिल करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि इस बहु-विषयक पत्रिका में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ताओं के सैद्धांतिक शोध-आधारित योगदान को प्रकाशित किया गया है। इसमें विद्वानों को ज्ञान और विचारों को सांझा करने और भाषाओं, कलाओं, सामाजिक विज्ञान के साथ-साथ लागू किए गए वर्तमान मुद्दों पर चर्चा करने के लिए भी एक मंच प्रदान किया गया है। इस अवसर पर सेंट बीडस महाविद्यालय की कार्यवाहक प्रधानाचार्य और पत्रिका की प्रधान संपादक सुश्री नंदिनी पठानिया ने पत्रिका के बारे में जानकारी दी।

कोविड-19 : घर से बाहर निकलते वक्त हाथों पर सैनिटाइजर और मुंह पर मास्क जरूरी

गिरिराज
हिमाचल की प्रगति और संस्कृति का दर्पण

कामयाब होने के लिए खुद पर भरोसा होना चाहिए। - अज्ञात

हिमाचल दिवस

पर्वतीय विकास का आदर्श राज्य

प्रदेश के इतिहास में 15 अप्रैल, 1948 का दिन सदैव स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज रहेगा। देश की आजादी के आठ माह बाद वर्ष 1948 को इसी ऐतिहासिक दिन पर पश्चिमी हिमालय में स्थित 30 छोटी-बड़ी रियासतों के विलय से हिमाचल अस्तित्व में आया। प्रदेश के प्रबुद्धजनों और यहां के जन नेताओं ने देश के स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ अंग्रेजों और रियासत कालीन शासन के खिलाफ दोहरी लड़ाई लड़ी। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर देश आजाद होने तक देश में जितने भी आंदोलन व क्रांतियां हुईं, उन सभी में प्रदेश के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। राष्ट्रीय स्वाधीनता के महायज्ञ में धामी गोलीकांड, पझौता आंदोलन, सुकेत सत्याग्रह, प्रजामण्डल आंदोलन सहित कई छोटे-मोटे आंदोलनों के माध्यम से इस पहाड़ी प्रदेश के लोगों ने अतुलनीय योगदान देकर अपनी बहादुरी का परिचय दिया। शिमला और पंजाब हिल स्टेट्स में प्रजामण्डलों का विकास एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। प्रजामण्डल के नेताओं ने स्थानीय लोगों को लामबंद किया और हिमाचल प्रदेश के रूप में एकीकरण में इन नेताओं की अंतर्राजीय गतिविधियों, रियासती प्रजामण्डल तथा बाद में हिमालयन स्टेट्स रीजनल काउंसिल की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। देश की आजादी के बाद भी प्रदेशवासी अलग राज्य की मांग पर अडिग रहे और केन्द्रीय नेतृत्व के समक्ष पहाड़ी रियासतों को मिलाकर एक अलग राज्य बनाने की पुरजोर मांग रखी। अंततः उनकी यह मेहनत रंग लाई जब 15 अप्रैल, 1948 को पहाड़ी रियासतों के विलय से हिमाचल प्रदेश अस्तित्व में आया और इसे केन्द्र शासित राज्य का दर्जा हासिल हुआ। चार जिलों महासू, मण्डी, चम्बा तथा सिरमौर के साथ प्रदेश अस्तित्व में आया और इन जिलों में 23 तहसीलें बनाई गईं। उस समय प्रदेश का कुल क्षेत्रफल 10,451 वर्गमील था तथा आबादी 9,83,367 थी। हालांकि वर्ष 1952 तक हिमाचल प्रदेश चीफ कमिश्नर्ज प्रोविंस के रूप में केन्द्र सरकार के अन्तर्गत विकास पथ पर अग्रसर रहा परन्तु प्रदेश के लोगों व नेताओं का 'स्वराज का सपना' अभी भी अधूरा था। प्रदेश भर में इस सपने को साकार करने के लिए आंदोलन हुए। इस संघर्ष के दौरान डॉ. यशवंत सिंह परमार शीर्ष नेता के रूप में उभर कर सामने आए और इनके नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश में लोकप्रिय सरकार की व्यवस्था के लिए केन्द्र से संवैधानिक संघर्ष किया। यह इसी संघर्ष का नतीजा रहा कि वर्ष 1952 में भारत के आम चुनावों के साथ हिमाचल प्रदेश में भी चुनाव हुए। 24 मार्च, 1952 को प्रदेश में पहली लोकप्रिय सरकार बनी और डॉ. यशवन्त सिंह परमार प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री बने। परन्तु विशाल हिमाचल के लिए अभी भी संघर्ष जारी था। केन्द्र सरकार द्वारा गठित 'राज्य पुनर्गठन आयोग' से हिमाचल के अस्तित्व पर पुनः खतरा मंडराने लगा क्योंकि आयोग द्वारा हिमाचल को पंजाब में विलय करने की सिफारिश की गई थी। प्रदेश के सभी राजनैतिक दलों ने मिलकर केन्द्र सरकार के समक्ष प्रदेश का पक्ष मजबूती से रखा। परिणामस्वरूप उनका विशाल हिमाचल का सपना प्रथम नवम्बर, 1966 को साकार हुआ। तत्पश्चात् 24 जनवरी, 1968 को प्रदेश विधानसभा में सर्वसम्मति से पूर्ण राज्य प्रदान करने का प्रस्ताव पारित किया गया। 31 जुलाई, 1970 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने संसद में हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की घोषणा की और दिसम्बर 1970 को संसद में स्टेट ऑफ हिमाचल प्रदेश एक्ट पास होने के साथ ही हिमाचल प्रदेश भारतीय गणतंत्र का 18वां राज्य बना। यदि हम 1948 से लेकर अब तक की प्रदेश की विकास यात्रा का आकलन करें तो इस छोटे से पहाड़ी राज्य में आश्चर्यजनक प्रगति की है। इस दौरान प्रदेश में हुए अभूतपूर्व विकास के परिणामस्वरूप आज हिमाचल की गिनती खुशहाल एवं प्रगतिशील राज्यों की श्रेणी में होती है। प्रदेश में सड़कों की लम्बाई बढ़कर 38,470 किलोमीटर हो चुकी है। 14,010 गांवों को सड़क सुविधा मिलने से लगभग 99 प्रतिशत पंचायतें सड़कों से जुड़ चुकी हैं। शिक्षण संस्थानों की संख्या बढ़कर 15,553 हो गई है तथा साक्षरता दर 82.80 पहुंच गई है। प्रदेश में 4,320 स्वास्थ्य संस्थानों के सुदृढ़ नेटवर्क के माध्यम से लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधा प्रदान की जा रही हैं। आज प्रदेश के सभी गांवों में बिजली उपलब्ध है। हिमाचल प्रदेश आज 'पावर सरप्लस राज्य' बन चुका है। प्रति व्यक्ति आय भी बढ़कर 1,90,407 रुपये हो गई है। प्रदेश के गांवों-गांवों में सड़क सुविधा उपलब्ध करवाने में भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा आरम्भ महत्त्वाकांक्षी 'प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना' वरदान सिद्ध हुई है, जिसके माध्यम से राज्य में 17716 किलोमीटर लंबी सड़कों का निर्माण किया गया। प्रदेश की इस विकास यात्रा में, वर्तमान राज्य सरकार का तीन वर्ष का कार्यकाल विशेष महत्त्व रखता है। इस दौरान सरकार ने अनेक नई योजनाएं आरम्भ कर विकास को नई दिशा प्रदान की हैं।

सावधान! क्या आप मैसेज फॉरवर्ड कर रहे हैं?

डॉ. उषा बंदे

वॉट्सएप पर आए पोस्ट को अपने ग्रुप में या मित्रों को फॉरवर्ड करना हमारी आदत बन गई है। मैसेज पढ़ते ही हमारी उंगलियां एकदम से फॉरवर्ड बटन की ओर फिसलती हैं और पल में मैसेज सैंकड़ों-हजारों मील दूर यात्रा करता हुआ आपके मित्रों या परिचितों के मोबाइल में जा धमकता है। 'शेयर' (सांझा) करने का संतोष होता है। फिर, उस पर आई प्रतिक्रिया देखने की भी जल्दी होती है और हम हर दस मिनिट के बाद मोबाइल देखते हैं कि उत्तर आया या नहीं। यह सब इतना सहज हो गया है कि हमें ध्यान ही नहीं रहता कि जो पोस्ट हमने भेजी है वह कैसी थी? क्या यह किसी को आहत कर सकती है, गुस्सा दिला सकती है, जातीय, प्रांतीय या धार्मिक भेद-भाव को बढ़ावा दे सकती है? हम यह भी भूल जाते हैं कि इन संदेशों के पीछे मनोविज्ञान, सामाजिकता एवं राजनीति हो सकती है। हमारी प्रक्रिया सहज होती है : हमारे पास विनोद भरा वीडियो आया, हमें वह गुदगुदा गया और हमने भेज दिया। बस इतना ही!! परंतु यह कतई ध्यान में नहीं आता कि हमने अपने रिश्ते को ठेस पहुंचाई होगी। और यदि आपके पोस्ट का उत्तर अनुकूल नहीं आया या कडुवाहट भरा आया तो मन में उदासी छा जाती है या क्रोध आ जाता है।

इसमें संदेह नहीं कि मैसेज पढ़ने का अपना एक अलग आनंद है। कुछ चित्र, कुछ सूचनाएं, जोक्स - खट्टे-मीठे, तीखे!! इनमें हम पूरी तरह खो जाते हैं। मोबाइल पर नजरें गड़ाए घंटों बीत जाते हैं, और पता तब चलता है जब घर का कोई सदस्य आकर झक्झोर देता है, 'बस हो गया अब' या फिर आँखें पनिया जाती हैं। अपराध करते पकड़े गए किसी बच्चे की तरह आप झेंपकर एकदम से मोबाइल रख देते हैं और सधकर बैठ जाते हैं। पल भर बाद फिर मोबाइल हाथ में आ जाता है। इसमें बच्चे जितने कसूरवार हैं उतने ही घर के बड़े सदस्य भी अपराधी हैं। एक सर्वे के अनुसार वरिष्ठ नागरिक वॉट्सएप का सर्वाधिक प्रयोग करने लगे हैं क्योंकि उनके लिए एकाकीपन में समय बिताने का, पुरानी यादें ताजा करने या नौकरी के लिए विदेश गए बच्चों से वार्तालाप करने का यह एक सरल और आवश्यक माध्यम बन गया है।

पहले-पहल वॉट्सएप में केवल अपने कुछ मित्रों या परिवार के व्यक्तिगत नंबर ही हमारे पास होते थे और संदेश फॉरवर्ड करने का भी इतना रिवाज नहीं था। पर अब वॉट्सएप ग्रुप बन गए हैं जिनमें निकट संबंधी, जिगरी दोस्त, परिचित, ऑफिस के सहकर्मी, सेवा-निवृत्त ग्रुप, स्कूल-कॉलेज के ग्रुप और अब ऑनलाइन पढ़ाई के ग्रुप आदि कई प्रकार होते हैं।

आजकल सोशल मीडिया ने जातीय, प्रांतीय, धार्मिक और देश के लिए हानिकारक सामग्री पर लगाम न लगाने के कारण समाज में बवाल मच गया है। जो उठता है, वह अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के नाम पर बहुत आपत्तिजनक और विवादास्पद बयान दे देता है। सोशल मीडिया पर वह हजारों की संख्या में घूमता है, देशद्रोही तत्त्व इसे हवा देते हैं और वातावरण में तनाव आ जाता है।

फिर इनमें उप-शाखाएं होती हैं, जैसे सहकर्मियों का मिला- जुला ग्रुप तो होगा ही पर इसके साथ ही महिला सहकर्मियों का अलग ग्रुप होगा, पुरुषों का अलग। कुछ बातें दोनों के लिए सांझी होती हैं, तो कुछ नहीं हो सकती। ग्रुप में आने वाले संदेशों की भरमार होती है और इन्हें पढ़कर इन पर अधिक विचार किए बिना तुरंत वॉट्सएप फॉरवर्ड किया जाता है। इच्छा यही की हमारे मित्र भी इनका लाभ उठाएं....जैसे स्वास्थ्य संबंधी कोई सूचना, कोई सुंदर कहानी, कोई ज्ञान-वर्धक बातें, बहुत कुछ सीखने, समझने लायक होता है।

आपका इरादा तो नेक है पर, जरा रुकिए और देखिये कहीं आप उलझन तो नहीं मोल ले रहे हैं? यह एक ऐसा फिसलन भरा रास्ता है जो जाने अनजाने आपको गर्त में धकेल सकता है। यहां हम सुप्रभात मेसेज या सकारात्मक (positive) या मोटिवेशनल पोस्ट की बात नहीं कर रहे हैं। इन पोस्ट्स को अधिकतर लोग देखते ही नहीं और जो देखते हैं वह बदले में गुड मॉर्निंग का कोई चित्र भेज देते हैं। बात बिगड़ती है राजनैतिक पोस्ट से या किसी असत्य घटना को सत्य साबित करने वाली पोस्ट्स से। जैसे, कुछ महीने पहले एक पोस्ट वॉट्सएप पर खूब फॉरवर्ड हुई जिसमें अमेरिका की हारवर्ड यूनिवर्सिटी को एक बड़ी राशि देने के लिए आए किसान दंपति के साथ दुर्व्यवहार की कहानी थी। उनके कपड़े देखकर कुलपति के सचिव ने उन्हें अंदर ही नहीं जाने दिया, घंटों बिठाए रखा। तंग आकर वह दोनों चले गए और उसी राशि से उस दंपति ने अन्य यूनिवर्सिटी खोली जो आज एक ख्यातनाम विश्वविद्यालय है। कहानी से प्रेरित होकर एक व्यक्ति ने यह पोस्ट NGO चलाने वाले अपने किसी दोस्त को बड़े चाव से फॉरवर्ड की, यह सोचकर कि उसका दोस्त इस दुर्व्यवहार पर टिप्पणी करेगा। पर हुआ उल्टा। दस मिनिट में दोस्त का संदेश आया 'यह पोस्ट 'फेक' है'। फिर एक लिंक भेजा और लिखा कि इस पर क्लिक करो तो पूरा विवरण मिल जाएगा। जिसने पोस्ट भेजा था उसने अपमानित महसूस किया क्योंकि यह बातचीत उनके दफ्तर के ग्रुप में चल रही थी जो औरों ने भी पढ़ी थी। कहना न होगा कि उन दोनों के सम्बन्धों में कटुता आ गई। जबकि कटुता आने का कोई ठोस कारण नहीं था।

फिर कटुता क्यों आई? क्योंकि अधिकतर लोग जब पोस्ट भेजते हैं तो यह भूल जाते हैं कि इसका उद्गम स्थान कोई और है, किसी ने हमें भेजी है और हम तो केवल आगे से आगे भेजने वाले हैं। जब हमें लगता है यह पोस्ट हमारी है तो इस पर आई प्रतिक्रिया को हम अपनी जीत या हार समझने की गलती करते हैं।

सबसे खतरनाक राजनीति और राजनीतिक पार्टियों पर कसे व्यंग्य होते हैं। अपनी तरफ से हम मजा लेने के लिए ऐसे पोस्ट भेजते हैं जिसमें किसी पार्टी की कोई पोल खोली हो, किसी नेता का मजाक उड़ाया हो, तब हम भूल जाते हैं कि हमारे ग्रुप में सब एक ही मत नहीं रखते होंगे।

अधिकांश लोग खुलकर राजनीति पर मत व्यक्त नहीं करते पर उनके अपने चहेते नेता और पार्टी हो सकती है। यही बात जातीय या किसी धर्म को लेकर भी हो सकती है। किसी पोस्ट से नाराज होकर हमारे मित्र या सहकर्मी कड़ा जवाब दे सकते हैं। जवाब आने पर हम वाद-विवाद करने लगते हैं और अंततः सम्बन्धों में दरार आ जाती है। जब कोई प्रतिक्रिया व्यक्त करता है तो हमारा प्रथम वाक्य होता है, 'क्या समझता है अपने आप को? बड़ा फन्नेखान बनता है। जोक भी नहीं समझ सकता।' आमतौर पर बड़े ग्रुप में या दफ्तर के ग्रुप में एकाध अन्य मतावलंबी हो सकता है। भूलकर हम उसे आहत करते हैं।

इसलिए ऐसे मैसेज ना ही भेजे जाएं तो हम अधिक सुरक्षित है। अगर भेजना ही है तो अपने अति निकट व्यक्ति को भेजिये जिनके विचार आप जानते हों। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि फॉरवर्ड किए कुछ मैसेज साइबर-क्राइम के तहत भी आ सकते हैं जिससे आपका मजाक आपको महंगा पड़ सकता है।

वैसे भी आजकल सोशल मीडिया ने जातीय, प्रांतीय, धार्मिक और देश के लिए हानिकारक सामग्री पर लगाम ना लगाने के कारण समाज में बवाल मच गया है। जो उठता है, वह अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के नाम पर बहुत आपत्तिजनक और विवादास्पद ब्यान दे देता है। सोशल मीडिया पर वह हजारों की संख्या में घूमता है, देशद्रोही तत्व इसे हवा देते हैं और वातावरण में तनाव आ जाता है। हम सब इससे अनभिज्ञ नहीं हैं। अतः सोशल मीडिया का उपयोग सोच-समझ कर करना हमारे, देश और राष्ट्र के हित में है।

संघर्ष जीवन का सबसे बड़ा वरदान

डॉ. जगदीश गांधी

जब तक जीवन है, तब तक संघर्ष है। प्रत्येक दिन कोई न कोई चुनौती, कोई न कोई संघर्ष जीवन में आते ही रहते हैं तो फिर इनसे घबराना कैसा? दुनियाँ में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है, जिसके जीवन में चुनौतियां, संघर्ष, दुःख, कठिनाई और रुकावटें न आयी हों। कोई परीक्षा में पास होने के लिए संघर्ष कर रहा है, तो कोई परीक्षा पास करने के बाद आगे जीवन में आने वाली कठिनाइयों एवं चुनौतियों से पार पाने के लिए संघर्ष कर रहा है। लेकिन जिंदगी में एक बात जरूर याद रखनी चाहिए कि बिना संघर्ष के किसी को सफलता कभी नहीं मिलती।

परिवर्तन से डरना और संघर्ष से कतराना, मनुष्य की सबसे बड़ी कायरता है। संघर्ष इंसान को मजबूत बनाता है, फिर चाहे वो कितना भी कमजोर क्यों न हो। वास्तव में संघर्ष और जीवन एक दूसरे के पर्याय हैं।

दरअसल हर इंसान के जीवन में संघर्ष होता है। केवल उसके रूप अलग-अलग होते हैं। इसलिए हमें संघर्षों से घबराना नहीं चाहिए। संघर्ष तो वह आभूषण है, जो व्यक्ति को आंतरिक रूप से सुंदर और शक्तिशाली बनाता है। वास्तव में जब तक जीवन है तब तक संघर्ष भी है। इसलिए हमें संघर्ष से भागना नहीं चाहिए बल्कि इसका डटकर मुकाबला करना चाहिए क्योंकि संघर्ष जितना बड़ा होगा सफलता भी उतनी ही महान होगी।

संघर्ष की राह में आई कठिनाइयां व्यक्तित्व को और निखारती है, लेकिन इसके लिए हमें अपनी सोच सकारात्मक रखनी चाहिए।

संघर्ष जीवन को निखारते हैं, संवारते व तराशते हैं और गढ़कर ऐसा बना देते हैं, जो कि दुनिया के लिए एक मिसाल बन जाती है। किसी ने सही ही कहा है कि संघर्ष की चाबी जीवन के सभी बंद दरवाजे खोल देती है और आगे बढ़ने के नए रास्ते भी प्रशस्त करती है। इस दौरान व्यक्ति के अंदर का हौसला उसे हारने नहीं देता और संघर्ष की लगन लगातार बनाए रखता है। इस तरह संघर्ष की तपन मनुष्य के जीवन को चमकाती है। इस प्रकार संघर्ष का दामन पकड़कर ही हम सफलता के द्वार को खोलते हैं।

जीवन में अगर संघर्ष न हो, चुनौतियां न हों तो मनुष्य के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। प्रखर और प्रतिभाशाली बनने के लिए संघर्ष और चुनौतियों को हर कदम पर स्वीकार करते हुए आगे बढ़ना चाहिए।

वास्तव में प्रतिभा, सुविधा और संसाधनों के बीच नहीं पनपती, बल्कि अभावों के बीच व संघर्ष के मध्य पनपती है और अपना प्रभाव दिखाती है। किसी ने सही ही कहा है कि संघर्ष की तपिश जीवन को सुखाती नहीं, बल्कि उसे निखार देती है। यही कारण है कि आज देश में अभावों और अंधेरों के बीच भी सफलता प्राप्त करने वाले युवाओं की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।

हम सभी के जीवन में अगर सफलता मिलती है तो असफलता भी हमारे हिस्से में आती ही रहती है। लेकिन ऐसे में जीवन में मिलने वाली हर असफलता के बाद हमें स्वयं से पूछना चाहिए कि इस घटना से मैंने क्या सीखा? तभी हम अपने रास्ते की रुकावटों को सफलता की सीढ़ियों में बदल पाएँगे। वास्तव में असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो। क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो। क्योंकि लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती और कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। इसलिए हमें जीवनभर संघर्षरत रहना चाहिए।

• • •

कृषक मित्र

पशुपालन के क्षेत्र में उद्यमिता के अवसर

हिमाचल प्रदेश एक कृषि प्रधान प्रदेश है। प्रदेश में औसत कृषि भूमि प्रति किसान 0.99 हेक्टेयर है जो कि अधिक उत्पादन एवं मुनाफा कमाने में एक बहुत बड़ा रोड़ा है। पिछले कुछ समय से कृषि क्षेत्र में विकास दर धीमी होने के कारण इसके सहायक उद्यमों जैसे कि पशु पालन एवं मछली पालन का महत्त्व बढ़ गया है। 2019 में सम्पन्न 20वीं पशु गणना के अनुसार हिमाचल प्रदेश में 44.12 लाख पशुधन एवं 13.41 लाख मुर्गे मुर्गियां हैं। पिछले वर्ष प्रदेश में 14.6 लाख टन कुल दूध का उत्पादन किया गया। व्यावसायिक पशु पालन उद्यमिता के क्षेत्र में एक उभरता हुआ आयाम है। पशु पालन को अपनाकर स्वरोज़गार के अवसर तलाशे जा सकते हैं। कोरोना महामारी के प्रकोप के बाद पशु पालन को स्वरोजगार के महत्त्वपूर्ण अवसर के रूप में देखा जा रहा है। पशु पालन में स्वरोज़गार के निम्न विकल्प उपलब्ध हैं:

डेयरी फार्मिंग/दुग्ध उत्पादनः दुग्ध उत्पादन एवं विपणन के लिए गाय, भैंस पालन, पशु पालन का सबसे बड़ा एवं महत्त्वपूर्ण अंग है। प्रदेश में दूध की बहुत बड़ी मात्रा, लगभग 1 लाख लीटर प्रतिदिन, पड़ोसी राज्यों पंजाब, हरियाणा से आपूर्ति की जाती है। इससे यह स्पष्ट है कि प्रदेश में दूध एवं दुग्ध पदार्थों दहीं, पनीर, घी इत्यादि की बाज़ार में एक निरंतर एवं स्थिर मांग उपलब्ध है जिसे कि स्थानीय किसान बंधु रोजगार का साधन बना सकतें हैं। डेयरी फार्मिंग से अधिकतम मुनाफे के लिए अच्छे पशुओं का चुनाव, उनका पालन पोषण, रख रखाव, दुग्ध का सही विपण्न अति आवश्यक है। इसके लिए जरूरी है कि उद्यम स्थापित करने से पहले किसी भी सरकारी अथवा मान्यता प्राप्त गैर सरकारी संस्था से डेयरी फार्मिंग का प्रशिक्षण हासिल किया जाए। सही प्रशिक्षण एवं जानकारी के अभाव में पशुपालन से होने वाली आमदनी में कमी आ सकती है। नज़दीकी पशु चिकित्सक की सलाह एवं सहायता से सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न पशुधन विकास योजनाओं का भी लाभ उठाया जा सकता है।

व्यावसायिक पशु पालन उद्यमिता के क्षेत्र में एक उभरता हुआ आयाम है। पशु पालन को अपनाकर स्वरोज़गार के अवसर तलाशे जा सकते हैं। कोरोना महामारी के प्रकोप के बाद पशु पालन को स्वरोजगार के महत्त्वपूर्ण अवसर के रूप में देखा जा रहा है।

दुग्ध प्रसंस्करणः गाय अथवा भैंस से प्राप्त कच्चे दूध को प्रसंस्कृत करके, तरल अवस्था में या विभिन्न उत्पाद बनाकर भी बेचा जा सकता है। इसके लिए डेयरी प्रसंस्करण मशीनरी की आवश्यकता पड़ती है। प्रसंस्करण करने से दूध की खराब न होने की अवधि बढ़ जाती है। साथ ही उत्पाद बनाने से मुनाफे में बढ़ोतरी हो जाती है। दुग्ध प्रसंस्करण के लिए जरूरी है कि प्रतिदिन कुछ न्यूनतम मात्रा दूध की प्रसंस्कृत की जाए। ऐसा न होने की स्थिति में प्रसंस्करण इकाई का स्थाई खर्च बढ़ जाता है और यह घाटे का

✍ मनोज शर्मा

सौदा बन सकता है। तरल दूध की बिक्री न होने की स्थिति में दूध से दहीं, पनीर, लस्सी, मक्खन, घी आदि उत्पाद बनाकर मण्डीकरण किया जाना चाहिए।

मुर्गी पालनः मुर्गी पालन के क्षेत्र में दो आरुपों में रोजगार के अवसर सृजित किये जा सकते हैं। अण्डा उत्पादन अथवा मीट उत्पादन हेतु। अण्डा उत्पादन के लिए मुर्गियां पालना **लेयर फार्मिंग** एवं मीट उत्पादन के लिए मुर्गियां पालना **ब्रायलर फार्मिंग** कहलाता है। हालांकि कुछ नस्लें दोनों तरह के फायदों (अधिक अण्डा एवं मांस उत्पादन) में सक्षम हैं। भारत में मुर्गी पालन एक व्यवस्थित उद्योग का रूप ले चुका है। व्यावसायिक मुर्गी पालन में हजारों/लाखों मुर्गे मुर्गियां एक साथ पाले जाते हैं और मशीनीकरण का अधिक से अधिक सहारा लिया जाता है। अण्डे देने वाली मुर्गियों को अलग अलग पिंजरों में रखा जाता है जिससे उनके प्रबंधन में आसानी हो जाती है। भारत में व्यावसायिक मुर्गी पालन ज्यादातर निचले एवं समतल क्षेत्रों तक ही सीमित है। मुर्गी पालन में कांट्रेक्ट फार्मिंग किसानों को नये अवसर प्रदान कर रहा है। इसमें कम्पनी एवं किसान के मध्य किए गए एक समझौते के अनुसार मुर्गी पालन किया जाता है और सभी प्रकार के इनपुट्स एवं तैयार माल के बाजारीकरण/मार्केटिंग की जिम्मेवारी कम्पनी की होती है।

यद्यपि लेयर फार्मिंग एक बहुत बड़ा उद्योग बन चुका है किन्तु हिमाचल प्रदेश में भूरे खोल वाले/देशी अण्डे को काफी अधिक पसन्द किया जाता है। इसी कारण प्रदेश में बैकयार्ड मुर्गी पालन काफी हद तक लाभकारी है जिसमें घर के आसपास कम लागत वाले शैड एवं बचे खुचे खाद्य सामग्री पर ही मुर्गे मुर्गियों को पाला जाता है। पक्षियों को खुले में भी चुगने के लिए छोड़ा जाता है जिससे उत्पादन लागत कम करने में सहायता मिलती है। बैकयार्ड मुर्गी पालन से कम लागत में ही अच्छा उत्पादन मिल जाता है और बाजार में भी देशी अण्डे एवं रंगीन मुर्गे मुर्गियों का भी अच्छा दाम मिल जाता है। इस तरह की मुर्गी पालन प्रणाली में हिमाचल प्रदेश में काफी सुनहरे अवसर उपलब्ध हैं।

बकरी/भेड़ पालन : पारम्परिक तौर पर हिमाचल प्रदेश में बकरी/भेड़ पालन मुख्यतः घुमन्तु गद्दी समुदाय के किसानों द्वारा किया जाता है। बकरी एक ऐसा जानवर है जिसे गरीब की गाय भी कहा जाता है। बकरियां दूध, मीट, चमड़ा, फर/रेशे के लिए पाली जाती हैं। बकरी का दूध काफी पौष्टिक एवं बीमारी से लड़ने वाले औषधिजनक गुणों से युक्त होता है। इसी कारण बकरी का दूध बच्चों, बूढ़ों एवं बीमार व्यक्तियों के लिए अनुमोदित किया गया है। बकरी के मांस की सभी धर्मों एवं समुदायों में मांग है। इन्ही विशेषताओं के कारण बकरी पालन आजीविका का साधन बनकर उभरा है और बहुत से किसान बकरी पालन को व्यावसायिक तौर पर अपना रहे हैं। भेड़ पालन में मांस के अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण उत्पाद ऊन भी प्राप्त होती है।

शूकर पालनः इसके अलावा किसान सूअर/शूकर पालन के व्यवसाय को भी अपनी आजीविका का साधन बना सकते हैं। शूकरों को मांस उत्पादन हेतु पाला जाता है। इनमें कम मात्रा में एवं निम्न गुणवत्ता की फीड/घरेलू भोजन अवशेष खाकर भी अधिक भार ग्रहण करने की अनोखी क्षमता होती है। साथ ही शूकरों में जिंदा भार से मीट प्राप्ति की प्रतिशतता सर्वाधिक होती है। इसका मुख्य कारण चमड़ी को भी मीट के रूप में उपयोग में लाना है। यद्यपि हिमाचल प्रदेश में सूअर के मांस (पॉर्क) की खपत विभिन्न कारणों से कम है किन्तु व्यावसायिक तौर पर सूअर पालन अपनाकर, तैयार माल को उत्तर पूर्वी भारतीय राज्यों में बेचा जा सकता है। हमारा पड़ोसी राज्य पंजाब इसी मण्डीकरण मॉडल को अपनाकर सफल रहा है।

किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले, उसके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करना अथवा प्रशिक्षण लेना अति आवश्यक है। इसके लिए किसान बंधु नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र, पशु चिकित्सक अथवा कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर से सम्पर्क कर सकते हैं।

सुरेन्द्र कुमार के लिए वरदान साबित हुई पुष्प क्रांति योजना

हिमाचल प्रदेश में फूलों की खेती को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार द्वारा आरम्भ की गई हिमाचल पुष्प क्रांति योजना प्रदेश के किसानों व बागबानों के लिए बेहद कारगर सिद्ध हो रही है। योजना का मुख्य उद्देश्य फूलों की खेती को बढ़ावा देकर स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान कर आने वाले समय में हिमालच को पुष्प राज्य के रूप में विकसित करना है।

सिरमौर जिला के राजगढ़ उपमंडल के गांव बरोठ के सुरेन्द्र कुमार कहते हैं कि खेती-बाड़ी से अपने परिवार का पालन-पोषण कर रहे थे पर इसके साथ ही उनकी रुचि फूलों की खेती में भी थी। खेती-बाड़ी व अन्य घरेलू कार्यों में व्यस्त रहने वाले सुरेन्द्र कुमार के चेहरे पर एक मुस्कान तब नजर आई जब उन्हें 'हिमाचल पुष्प क्रांति योजना' के बारे में पता चला और फूलों की खेती आरम्भ की। इसे उनकी आर्थिकी भी सुदृढ़ हुई है। इस कामयाबी का श्रेय उन्होंने प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही 'हिमाचल पुष्प क्रांति' योजना को दिया है, जिसके कारण प्रदेश के किसानों व बागबानों और ग्रामीण बेराजगार युवाओं को स्वरोजगार का बेहतर विकल्प उनके घर-द्वार पर ही उपलब्ध हो रहा है।

बागबानी विभाग द्वारा पुष्प क्रांति योजना के तहत विभिन्न किस्मों के फूल तैयार करने के लिए उच्च तकनीक वाले पॉलीहाउस बनाने और पुष्प की खेती के बारे में किसानों व बागबानों को समय-समय पर प्रशिक्षण व जानकारी दी जाती है। इस योजना के तहत किसानों को गुलाब, कारनेशन, लीलियम तथा जरबेरा जैसे मुख्य पुष्पों के उत्पादन के लिए 85 प्रतिशत का अनुदान भी विभाग द्वारा दिया जाता है। इसके अलावा इन फूलों की पौध की खरीद के लिए 50 प्रतिशत का

✍ सनम छेरिंग नेगी

अनुदान भी दिया जाता है। उद्यान विभाग द्वारा पुष्प क्रांति योजना के तहत उन्हें 1500 वर्ग मीटर पॉलीहाउस का निर्माण करने व फूलों की खेती के लिए 12 लाख 36 हजार रुपये का अनुदान सहायता राशि दी गई। सुरेन्द्र कुमार कहते हैं कारनेशन के पौधे से 3 वर्षों तक फूल प्राप्त कर सकते हैं। एक पौधे से एक साल में 10 स्टिक फूलों की निकलती है और प्रत्येक स्टिक की लंबाई लगभग ढाई से तीन फुट तक होती है और बाजार में इसके अच्छे दाम भी मिलते हैं। 1500 वर्ग मीटर क्षेत्र में 35 हजार तक फूलों के पौधे लगाए जा सकते हैं। पुष्प क्रांति योजना के जरिए युवा, किसान व बागबान फूलों की खेती करके अच्छी कमाई कर सकते हैं। सुरेन्द्र कुमार पुष्प उत्पादन से वह लगभग 5 से 7 लाख रुपए सालाना कमा रहे हैं। प्रदेश सरकार द्वारा बेरोजगार युवाओं, किसानों व बागबानों के हित व कल्याण के लिए आरम्भ की गई इस योजना का लाभ जरूरतमंदों तक पहुंचाने के लिए उन्होंने प्रदेश सरकार का आभार व्यक्त किया है।

'हिमाचल पुष्प क्रांति' का लाभ उठाने के लिए इच्छुक किसानों व बागबानों को जिला स्तर पर जिला उप-निदेशक उद्यान व खण्ड स्तर पर विषय वाद विशेषज्ञ बागबानी/उद्यान विकास अधिकारी के कार्यालय में आवेदन करना होता है। तकनीकी व अन्य पहलुओं की समीक्षा के उपरांत उन्हें विभाग की ओर से आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। 'हिमाचल पुष्प क्रान्ति' योजना जहां स्वरोजगार के लिए वरदान साबित हो रही है वहीं फूलों के उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए भी यह योजना सहायक सिद्ध हो रही है।

प्रदेश में सोलर बाड़बन्दी की ओर बढ़ रहा किसानों का रुझान

मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना हिमाचल में सुरक्षित खेती की नई इबारत लिख रही है। किसी समय जंगली जानवरों व बेसहारा पशुओं के उत्पात के कारण खेती छोड़ चुके किसान अब दोबारा फसल उत्पादन की ओर लौटे हैं। योजना के तहत पूरे प्रदेश सहित हमीरपुर जिला में भी सोलर फैंसिंग व कांटेदार तार के माध्यम से बाड़बंदी कर फसलों का संरक्षण सुनिश्चित किया गया है।

मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना से तीन वर्षों में 3873 किसान लाभान्वित

जंगली जानवरों व बेसहारा पशुओं के उत्पात के कारण खेती छोड़ चुके किसान अब दोबारा फसल उत्पादन की ओर लौटे हैं। योजना के तहत पूरे प्रदेश सहित हमीरपुर जिला में भी सोलर फैंसिंग व कांटेदार तार के माध्यम से बाड़बंदी कर फसलों का संरक्षण सुनिश्चित किया गया है।

इस योजना के अंतर्गत व्यक्तिगत सोलर बाड़बंदी के लिए 80 प्रतिशत अनुदान प्रदान किया जा रहा है। वहीं किसान समूह आधारित बाड़बंदी के लिए 85 प्रतिशत सब्सिडी दी जा रही है। योजना में कांटेदार व चेन लिंक बाड़बंदी भी शामिल की गई है, जिस पर 50 प्रतिशत अनुदान उपलब्ध है। इसी प्रकार कम्पोजिट बाड़बंदी पर 70 प्रतिशत सब्सिडी दी जा रही है।

पूरे प्रदेश में गत तीन वर्षों में 3,873 से अधिक किसान इस योजना का लाभ उठा चुके हैं। प्रदेश में योजना पर 105 करोड़ रुपए व्यय किए गए हैं और गत वित्त वर्ष में इसके लिए 40 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया। हमीरपुर जिला में भी गत तीन वर्षों में इस योजना के अंतर्गत लगभग साढ़े सात करोड़ रुपए की राशि व्यय की गई है। इस अवधि में 312 लाभार्थी किसानों ने सोलर फैंसिंग व कांटेदार तार द्वारा बाड़बंदी कर फसलों का संरक्षण किया है।

अच्छी बात यह है कि जिला में किसानों का इस योजना के प्रति उत्साह एवं विश्वास लगातार बढ़ा है और लाभार्थियों की संख्या भी उसी अनुपात में बढ़ी है। किसानों का कहना है कि जंगली जानवरों विशेष तौर पर बंदरों के उत्पात से फसलें खराब होने के कारण उनका खेती के प्रति उत्साह कम हो गया था, मगर मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना वरदान बनकर आई है। इससे बंदरों के उत्पात से उनकी फसलों का बचाव संभव हुआ है और अब इसमें सोलर फैंसिंग के साथ-साथ कांटेदार बाड़बंदी का प्रावधान जुड़ने से अन्य जंगली व बेसहारा जानवरों से भी फसल सुरक्षित हुई है।

हमीरपुर जिला में किसानों के मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना के प्रति बढ़ते उत्साह को देखते हुए प्रदेश सरकार ने भी इस योजना के लिए बजट प्रावधान में उतरोत्तर वृद्धि की है। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2018-19 में योजना के अंतर्गत दो करोड़ 60 लाख रुपए व्यय कर 92 किसानों को लाभ पहुंचाया गया। वर्ष 2019-20 में दो करोड़ चार लाख रुपए व्यय किए गए। इस वर्ष लाभार्थियों की संख्या 101 रही। वर्ष 2020-21 में कोरोना संकट के बावजूद योजना का बेहतर क्रियान्यवन करते हुए दो करोड़ 80 लाख रुपए का व्यय जिला में किया गया और लाभार्थी किसानों की संख्या बढ़कर 119 तक पहुंच गई।

मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना का लाभ उठाने के लिए किसान व्यक्तिगत तौर पर अथवा किसान समूह के रूप में नजदीक के कृषि प्रसार अधिकारी, कृषि विकास अधिकारी अथवा विषयवाद विशेषज्ञ (एसएमएस) के माध्यम से कृषि उपनिदेशक के समक्ष आवेदन कर सकते हैं। विभाग के वृत्त, विकास खांड एवं जिला स्तरीय कार्यालयों में आवेदन फॉर्म उपलब्ध रहते हैं। आवेदन के साथ उन्हें अपनी भूमि से संबंधित राजस्व दस्तावेज संलग्न करने होंगे।

✍ हेमंत शर्मा

कोविड-19 : मास्क पहनें सुरक्षित रहें

74वें हिमाचल दिवस पर विशेष लेख

समग्र व सन्तुलित विकास के पथ पर अग्रसर हिमाचल

हिमाचल दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर का आलेख

पंद्रह अप्रैल हम सभी हिमाचलवासियों के लिए, एक ऐतिहासिक और चिरस्मरणीय दिवस है। देश की आजादी के ठीक 8 माह बाद, सन् 1948 को, आज ही के दिन, हमारा यह खूबसूरत पहाड़ी प्रदेश, 30 छोटी-बड़ी पहाड़ी रियासतों को विलय कर केन्द्रशासित 'चीफ कमीशनरस प्रोविन्स' के रूप में अस्तित्व में आया। भारतीय सिविल सेवा के श्री एन.सी. मेहता को प्रदेश का प्रथम चीफ कमिश्नर और पैण्ड्रल मून को डिप्टी चीफ कमिश्नर नियुक्त किया गया।

शिमला हिल स्टेट्स की 26 रियासतों और ठकुराइयों को मिलाकर महासू जिला बनाया गया, जिसमें बाघल, बघाट, बलसन, रामपुर-बुशैहर, खनेटी, देलथ, बेजा, भज्जी, दरकोटी, धामी, जुब्बल, रावीं, ढाढी, क्योंथल, ठियोग, कोटी, घूण्ड, मधान, रतेश, कुम्हारसेन, कुनिहार, कुठाड़, मांगल, महलोग, शांगरी, थरोच रियासतें शामिल थी। मण्डी-सुकेत रियासतों का विलय कर मण्डी जिला बनाया गया। चम्बा व सिरमौर को अलग-अलग जिलों का दर्जा दिया गया। इन चारों जिलों में 23 तहसीलें बनाई गईं। प्रदेश का क्षेत्रफल 10,451 वर्ग किलोमीटर तथा जनसंख्या 11.09 लाख थी। तत्पश्चात 1 जुलाई, 1954 को पार्ट 'सी' स्टेट बिलासपुर का हिमाचल में विलय किया गया। 1 नवम्बर, 1966 को पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों को हिमाचल में मिलाया गया तथा प्रदेश का क्षेत्रफल 55,673 वर्ग किलोमीटर हो गया। वर्तमान में भी यही क्षेत्रफल है तथा प्रदेश में 12 जिलें व जनगणना 2011 के अनुसार प्रदेश की जनसंख्या 68.64 लाख हैं।

हिमाचल को एक अलग राज्य के रूप में स्थापित करने में तत्कालीन नेतृत्व के साथ-साथ प्रजामंडल आंदोलन के नायकों व आंदोलनकारियों और यहां की जागरूक जनता ने बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिमाचल प्रदेश के गौरवमयी इतिहास में धामी गोली कांड, सुकेत सत्याग्रह, पझौता आंदोलन का विशेष स्थान है।

मैं इस अवसर पर सभी प्रदेशवासियों को हिमाचल दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ तथा प्रदेश व प्रदेशवासियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

मैं, 'हिमाचल दिवस' के अवसर पर हिमाचल निर्माता और प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. यशवन्त सिंह परमार तथा उन सभी महानुभावों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस प्रदेश की अलग पहचान बनाने के लिए अपना योगदान दिया है।

इस अवसर पर मैं, इस वीर भूमि के उन बहादुर सैनिकों को भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ, जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया है। मैं, इस प्रदेश के मेहनती, ईमानदार व शान्तिप्रिय लोगों का विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके निरन्तर प्रयासों से हिमाचल प्रदेश ने देश-विदेश में एक विशिष्ट पहचान बनाई है।

यह हम सब जानते हैं कि इस प्रदेश ने, अस्तित्व में आने के उपरान्त लगभग शून्य से अपनी विकास यात्रा आरम्भ की थी। उस समय यहां साक्षरता दर मात्र 4.8 प्रतिशत थी। शैक्षणिक संस्थान केवल शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित थे। स्वास्थ्य संस्थान केवल 88 ही थे। मात्र 288 किलोमीटर लम्बी सड़कें थीं, वह भी अधिकतर कच्ची। बिजली की सुविधा भी मात्र छः गांवों तक सीमित थी। उस समय प्रति व्यक्ति आय भी 240 रुपये थी।

वर्ष 1971 में जब यह प्रदेश एक पूर्ण राज्य बना, उस समय तक भी, यहां कोई विशेष विकास नहीं हो पाया था। वर्ष 1971 में प्रदेश में 10,617 किलोमीटर लम्बी सड़कें तथा साक्षरता दर 31.96 प्रतिशत थी। प्रदेश में 4,693 शैक्षणिक संस्थान तथा 587 स्वास्थ्य संस्थान थे। बिजली की सुविधा भी 3,249 गांवों में उपलब्ध थी। प्रति व्यक्ति आय भी मात्र 651 रुपये थी।

आज हिमाचल की गिनती खुशहाल एवं प्रगतिशील राज्यों की श्रेणी में हो रही है। प्रदेश में सड़कों की लम्बाई बढ़कर 38,470 किलोमीटर हो चुकी है। 14,010 गांवों को सड़क सुविधा से जोड़ा जा चुका है। लगभग 99 प्रतिशत पंचायतें सड़कों से जुड़ चुकी हैं। शेष पंचायतों को शीघ्र सड़क से जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

शिक्षण संस्थानों की संख्या भी बढ़कर 15,553 हो गई है तथा साक्षरता दर 82.80 पहुंच गई है। प्रदेश में 4,320 स्वास्थ्य संस्थानों का बड़ा नेटवर्क लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधा प्रदान कर रहा है। आज प्रदेश के सभी गांवों में बिजली उपलब्ध है। यहां तक कि हिमाचल प्रदेश आज 'पावर सरप्लस राज्य' बन चुका है। प्रति व्यक्ति आय भी बढ़कर 1,90,407 रुपये हो गई है।

प्रदेश के गांवों-गांवों में सड़क सुविधा उपलब्ध करवाने में भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा आरम्भ महत्त्वाकांक्षी 'प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना' वरदान सिद्ध हुई है। अटल टनल, रोहतांग भी उनकी दूरदर्शी सोच की ही देन है, जिसका उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 3 अक्तूबर, 2020 को किया गया।

प्रदेश की इस विकास यात्रा में, वर्तमान प्रदेश सरकार के सेवाकाल के तीन वर्ष विशेष महत्त्व रखते हैं। सरकार ने अनेक नई योजनाएं आरम्भ की हैं जिनके परिणामस्वरूप प्रदेश ने विकास की नई बुलंदियां छुई हैं और प्रदेश का समग्र व सन्तुलित विकास सुनिश्चित हुआ है।

हमारी सरकार यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मूलमंत्र 'सबका साथ-सबका विकास और सबका विश्वास' को समक्ष रखकर कार्य कर रही है। प्रदेश को प्रगति के शिखर पर ले जाने के सपने को साकार करने में, प्रधानमंत्री जी का भरपूर सहयोग मिल रहा है, जिसके लिए मैं समस्त प्रदेशवासियों की ओर से उनका हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

इन वर्षों में हमने अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को सहेज कर रखने के साथ-साथ आधुनिकीकरण को भी अपनाया है। हम 'डिजिटल इंटरफेस' तथा 'जवाबदेह प्रशासन' के माध्यम से, देश के दूरदर्शी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सिद्धांत 'मिनीमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्ननेंस' को कार्यान्वित कर रहे हैं।

27 दिसम्बर, 2017 को शपथ ग्रहण समारोह के उपरान्त पहले दिन ही प्रथम मंत्रिमण्डल की बैठक में वृद्धावस्था पेंशन पाने की आयु सीमा को 80 वर्ष से घटाकर 70 वर्ष किया गया तथा कोई आय सीमा भी नहीं रखी गई। प्रदेश में सामाजिक सुरक्षा पेंशन पर 642.58 करोड़ रुपये व्यय किए। प्रदेश सरकार द्वारा सामाजिक सुरक्षा पेंशन के 1,63,607 नए मामले स्वीकृत किए गए हैं।

जनता से सीधा संवाद स्थापित करने तथा जन शिकायतों का त्वरित समाधान करने के लिए 3 जून, 2018 को आयोजित प्रथम जनमंच से अब तक सभी विधानसभा क्षेत्रों में 200 जनमंच आयोजित किए गए हैं, जिनमें 48,694 शिकायतें व मांगपत्र प्राप्त हुए। इन शिकायतों में से 91 प्रतिशत से भी अधिक शिकायतों का निपटारा किया जा चुका है। 16 सितम्बर, 2019 से आरम्भ मुख्यमंत्री सेवा संकल्प हेल्पलाइन-1100 पर 1,51,83 से अधिक जन शिकायतें प्राप्त हुई हैं जिनमें से 1.20 लाख से अधिक का समाधान किया जा चुका है।

प्रदेश में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत 1.36 लाख परिवारों को निःशुल्क गैस कनेक्शन प्रदान किए गए जिस पर 21.76 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं। प्रदेश सरकार ने हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना आरम्भ की है। योजना के अन्तर्गत 2.91 लाख महिलाओं को निःशुल्क गैस कनेक्शन उपलब्ध करवाए जा चुके हैं। दिसम्बर, 2019 में प्रदेश को धुंआ मुक्त राज्य घोषित किया गया था। इस प्रकार की उपलब्धि प्राप्त करने वाला हिमाचल देशभर में पहला राज्य बन गया है।

आयुष्मान भारत योजना के तहत प्रदेश में 3.34 लाख परिवारों ने गोल्डन कार्ड बनाए हैं। योजना के तहत 77,549 लाभार्थियों को लगभग 81 करोड़ रुपये की

आज हिमाचल की गिनती खुशहाल एवं प्रगतिशील राज्यों की श्रेणी में हो रही है। प्रदेश में सड़कों की लम्बाई बढ़कर 38,470 किलोमीटर हो चुकी है। 14,010 गांवों को सड़क सुविधा से जोड़ा जा चुका है। लगभग 99 प्रतिशत पंचायतें सड़कों से जुड़ चुकी हैं।

अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को सहेज कर रखने के साथ-साथ आधुनिकीकरण को भी अपनाया है। हम 'डिजिटल इंटरफेस' तथा 'जवाबदेह प्रशासन' के माध्यम से, देश के दूरदर्शी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सिद्धांत 'मिनीमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्ननेंस' को कार्यान्वित कर रहे हैं।

प्रदेश में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत 1.36 लाख परिवारों को नि:शुल्क गैस कनेक्शन प्रदान किए गए जिस पर 21.76 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं। प्रदेश सरकार ने हिमाचल गृहिणी सुविधा योजना आरम्भ की है। योजना के अन्तर्गत 2.91 लाख महिलाओं को नि:शुल्क गैस कनेक्शन उपलब्ध करवाए जा चुके हैं। दिसम्बर, 2019 में प्रदेश को धुंआ मुक्त राज्य घोषित किया गया था। इस प्रकार की उपलब्धि प्राप्त करने वाला हिमाचल देशभर में पहला राज्य बन गया है।

नि:शुल्क इलाज की सुविधा प्रदान की गई है।

प्रथम जनवरी, 2019 से आरम्भ हिमकेयर योजना के तहत 4.61 लाख परिवार पंजीकृत हुए हैं तथा 1.25 लाख लाभार्थियों को 129.27 करोड़ रुपये के नि:शुल्क इलाज की सुविधा प्रदान की जा चुकी है। सहारा योजना के अन्तर्गत गंभीर बीमारियों से पीड़ित आर्थिक रूप से कमजोर मरीजों को सहायता राशि के रूप में 3000 रुपये प्रतिमाह दिए जा रहे हैं। योजना के अन्तर्गत 11,187 लाभार्थियों को 13 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की गई है।

प्रदेश के 18 से 45 वर्ष के युवाओं को स्वावलंबन से जीवनयापन करने के लिए आरंभ मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना के तहत 60 लाख रुपये तक की परियोजना लागत पर पुरुषों को 25, महिलाओं को 30 तथा विधवाओं को 35 प्रतिशत का उपदान दिया जा रहा है। योजना के तहत 2,700 इकाइयां स्थापित की गई है, जिससे 8,500 लोगों को रोजगार मिला है। लगभग 70 करोड़ रुपये का उपदान प्रदान किया जा चुका है।

मुख्यमंत्री स्टार्टअप योजना के तहत 100 लाभार्थियों को लगभग 1.70 करोड़ रुपये प्रदान किए गए है। योजना के तहत नए उद्यम वाले युवाओं को एक वर्ष के लिए 25,000 रुपये प्रतिमाह दिए जा रहे हैं। हिम स्टार्टअप योजना के तहत 10 करोड़ रुपये का वैंचर फंड स्थापित किया गया है। धर्मशाला में 7 व 8 नवम्बर, 2019 को आयोजित की गई ग्लोबल इन्वेस्टर्स मीट के दौरान 96,721 करोड़ रुपये निवेश के 703 समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित हुए। इस मीट में कुल 36 देशों के 200 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। तत्पश्चात् 13,656 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का पहला ग्राउंड ब्रेकिंग समारोह भी आयोजित किया जा चुका है। नई राहें-नई मंजिलें योजना के अन्तर्गत 150 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। योजना के तहत कांगड़ा जिला के बीड़-बिलिंग को पैराग्लाइडिंग गंतव्य, शिमला जिला की प्रसिद्ध चांशल घाटी को स्की गंतव्य जबकि जिला मण्डी के जंजैहली को ईको-पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित किया जा रहा है। योजना के तहत अब करगाणु-सेरजगास व नौहराधार-चूड़धार का भी विकास किया जा रहा है। योजना के तहत अटल टनल, रोहतांग के आसपास हेलीपेड सहित आवश्यक सुविधाएं विकसित की जा रही है। जिला मण्डी के कंगनीधार में 40 करोड़ रुपये की लागत से भव्य शिवधाम के प्रथम चरण का निर्माण कार्य किया जा रहा है।

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान के तहत 5,595 हेक्टेयर क्षेत्र को लाया गया है तथा लगभग 1 लाख किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाया है। मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना के तहत सोलर व कांटेदार तार की बाड़बन्दी से 3,873 किसानों को 105 करोड़ रुपये के लाभ प्रदान किए गए।

मुख्यमंत्री आवास योजना के तहत 4,417 मकान निर्मित किए गए जिस पर लगभग 60 करोड़ रुपये व्यय किए गए। प्रदेश में विभिन्न आवास योजनाओं के अन्तर्गत 10,000 नए आवासों का निर्माण किया जाएगा।

मेधा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत वर्ष 2019-20 में 182 पात्र विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है। प्रदेश को शिक्षा क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के लिए अनेक राष्ट्र स्तरीय पुरस्कार प्राप्त हुए। शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट 2017-18 में प्रदेश को देशभर में प्रथम स्थान मिला। वर्ष 2019 में इंडिया टूडे द्वारा किए गए सर्वेक्षण में प्रदेश को 'बेस्ट परफॉर्मिंग स्टेट आवार्ड' से नवाजा गया है। प्रथम कक्षा से आठवीं कक्षा तक के सभी विद्यार्थियों को मुफ्त पाठ्य पुस्तकें वितरित करने वाला हिमाचल प्रथम प्रदेश बना है। समग्र शिक्षा के तहत शिक्षकों को ऑनलाइन प्रशिक्षण एवं निगरानी के लिए वर्ष 2019 में प्रदेश को 'स्कॉच आर्डर ऑफ मेरिट' सम्मान प्राप्त हुआ है।

सशक्त महिला योजना के तहत 4.22 करोड़ रुपये की राशि व्यय की जा चुकी है। मुख्यमंत्री दस्तकार सहायता योजना के तहत दस्तकारों को 30 हजार रुपये तक की कीमत के औजार 75 प्रतिशत अनुदान पर प्रदान किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ग्राम कौशल योजना के तहत प्रशिक्षक को 7500 रुपये तथा प्रशिक्षु को 3000 रुपये प्रतिमाह दिया जा रहा है।

मुख्यमंत्री रोशनी योजना के तहत 5,862 लाभार्थी बिजली के कनेक्शन प्राप्त कर चुके हैं। प्रदेश में 326.25 मेगावाट की क्षमता वाली विभिन्न परियोजनाएं शुरू की जा चुकी हैं और 162.29 मेगावाट की क्षमता वाली परियोजनाएं निर्माणाधीन हैं। अगस्त, 2019 से आरम्भ जल जीवन मिशन के तहत प्रथम चरण में लगभग 2,900 करोड़ रुपये की लागत की 327 योजनाओं को स्वीकृति प्रदान की गई है। इसके उपरान्त वित्त वर्ष 2019-20 के लिए 530 और वर्ष 2020-21 के लिए 696 योजनाएं स्वीकृत की गई हैं। लगभग 2.12 लाख घरों को नल से जल उपलब्ध करवाया जा चुका है। इस मिशन के तहत वर्ष 2024 तक देश के सभी ग्रामीण घरों को नल से स्वच्छ एवं पर्याप्त पेयजल उपलब्ध करवाने का लक्ष्य रखा गया है। प्रदेश में यह लक्ष्य जुलाई, 2022 तक प्राप्त करने के प्रयास जारी है। आज प्रदेश में 38,470 किलोमीटर लम्बी सड़के तथा 2,226 पुल है। वर्ष 2020-21 में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 1,915 किलोमीटर लम्बी, 283 सड़कों का निर्माण किया गया जो पिछले सभी वर्षों में सर्वाधिक है।

वर्ष 2020-21 में इस योजना के तहत सड़क निर्माण में लक्ष्य के उपलिब्ध प्रतिशत में प्रदेश को पहला स्थान प्राप्त हुआ है जबकि सड़क निर्माण में हिमाचल दूसरे स्थान पर है। जिला मण्डी को सबसे अधिक नई सड़कों के निर्माण में देश के सभी जिलों में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। गत् तीन वर्षों में योजना के तहत 4,468 किलोमीटर सड़कों का कार्य पूर्ण किया गया जिस पर 2,500 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं।

सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण अटल टनल, रोहतांग का निर्माण देश व प्रदेश के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। यह टनल पूरे साल जनजातीय क्षेत्र लाहौल-स्पीति तथा लेह के लिए सड़क सुविधा उपलब्ध करवाएगी। प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान के तहत 5,595 हेक्टेयर क्षेत्र को लाया गया है तथा लगभग 1 लाख किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाया है। मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना के तहत सोलर व कांटेदार तार की बाड़बन्दी से 3,873 किसानों को 105 करोड़ रुपये के लाभ प्रदान किए गए।

बागवानी को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। इस समय फलों का उत्पादन 2.33 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में किया जा रहा है। फलों का उत्पादन बढ़कर 8.45 लाख मीट्रिक टन हो गया। प्रदेश में 1134 करोड़ रुपये की हिमाचल प्रदेश बागवानी विकास परियोजना तथा 1000 करोड़ रुपये की एच.पी. शिवा परियोजना चलाई जा रही है। हिमाचल पुष्प क्रांति योजना के तहत 1,134 पुष्प उत्पादकों को 23.60 करोड़ रुपये का अनुदान दिया गया है।

गत् एक वर्ष से पूरी दुनिया कोविड-19 महामारी से जूझ रही है और हमारा प्रदेश भी इससे अछूता नहीं है। कोविड-19 की चुनौतियों के बावजूद सरकार ने आपके सहयोग से मूलभूत सुविधाओं को सुचारू रूप से संचालित कर प्रदेश की आर्थिकी को पुनः पटरी पर लाने की कोशिश की। प्रदेश में एक्टिव केस फाइडिंग अभियान के अन्तर्गत 70 लाख लोगों की घर-द्वार पर स्वास्थ्य जानकारी प्राप्त की गई। सरकार द्वारा लॉकडाउन के कारण दूसरे राज्यों में फंसे हिमाचल के 2.50 लाख लोगों को प्रदेश वापिस लाया गया।

कोविड-19 महामारी के दृष्टिगत प्रदेश सरकार ने ई-संजीवनी ओपीडी आरम्भ की जिसके अन्तर्गत प्रदेश के विभिन्न मेडिकल कॉलेजों के 16 डॉक्टरों की टीम मरीजों को नि:शुल्क ऑनलाईन चिकित्सा परामर्श प्रदान कर रही है।

हमें इस बात पर गर्व है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मजबूत नेतृत्व में कोरोना महामारी की चुनौती का सामना करते हुए आप सभी प्रदेशवासियों के सहयोग से इसके संक्रमण को रोकने में हम काफी हद तक सफल हुए हैं। अब हमारे वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों से वैक्सीन आ चुकी है, जिससे इस वायरस से सहमी जनता को बड़ी राहत मिली है। हमें वैक्सीन लगाने के अभियान में तो शामिल होना ही है, साथ में 'दवाई भी-कड़ाई भी' के मंत्र को अपनाना है और किसी भी प्रकार की कोताही नहीं बरतनी है। कोरोना पुनः बड़ी तेजी से अपने पांव पसार रहा है। हमें और भी सजग व सतर्क रहना होगा और एक जिम्मेवार नागरिक की भूमिका निभानी होगी।

आइए! इस अवसर पर हम सब प्रण लें कि हम अपने प्रदेश को एक 'जीवंत एवं आत्मनिर्भर' हिमाचल बनाने और इसे प्रगति के शिखर पर ले जाने में अपना भरपूर योगदान देंगे। हिमाचल दिवस की पुनः आप सबको हार्दिक शुभकामनाएं!

जय हिन्द-जय हिमाचल!

मुख्यमंत्री स्टार्टअप योजना के तहत 100 लाभार्थियों को लगभग 1.70 करोड़ रुपये प्रदान किए गए है। योजना के तहत नए उद्यम वाले युवाओं को एक वर्ष के लिए 25,000 रुपये प्रतिमाह दिए जा रहे हैं। हिम स्टार्टअप योजना के तहत 10 करोड़ रुपये का वैंचर फंड स्थापित किया गया है।

बंडारू दत्तात्रेय
राज्यपाल
हिमाचल प्रदेश

सत्यमेव जयते

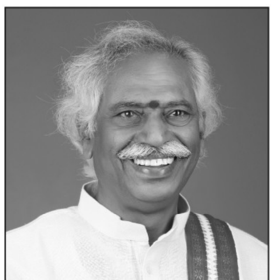

हिमाचल दिवस पर महामहिम राज्यपाल का सन्देश

प्रिय प्रदेशवासियो,

हिमाचल प्रदेश के 74वें दिवस पर प्रदेशवासियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हिमाचल प्रदेश के इतिहास में 15 अप्रैल, 1948 का दिन बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इस दिन 30 पहाड़ी रियासतों के विलय से हिमाचल प्रदेश अस्तित्व में आया था। इन 73 वर्षों में इस छोटे से पहाड़ी प्रदेश ने विकास के नये आयाम स्थापित किए और देश के अन्य राज्यों के लिए विकास का आदर्श बनकर उभरा है। विकास के इस सफर में यहां के मेहनतकश, ईमानदार, कर्मठ और प्रगतिशील लोगों का बड़ा योगदान रहा है।

यह साल हम हिमाचल प्रदेश के स्वर्ण जयंती पूर्ण राज्यत्व वर्ष के रूप में भी मना रहे हैं। पिछले पांच दशकों में शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा को प्राथमिकता देकर राज्य ने सामाजिक-आर्थिक लक्ष्यों को हासिल कर देश में उदाहरण प्रस्तुत किया है। दुर्गम क्षेत्रों तक अधोसंरचना विकास, पानी, बिजली जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध करवाकर राज्य ने विकास के प्रवाह को गति दी है।

आज का यह पावन दिवस प्रदेशवासियों को राज्य के प्रति उनके दायित्व का बोध भी करवाता है। पर्यावरण संरक्षण और विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित व संरक्षित रखने के लिए विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है। युवा पीढ़ी नशे की बुराई से बचाना है और कौशल विकास की दिशा में उन्हें आगे बढ़ाना है। हम मिलकर सामाजिक समरसता कायम करें और राज्य के तीव्र विकास का संकल्प लें।

पिछले साल के आरम्भ से ही हम कोरोना महामारी से लड़ रहे हैं। हमारे कुशल नेतृत्व व वैज्ञानिकों की मेहनत से समय से पूर्व कोरोना वैक्सीन तैयार की गई। दुनिया के सबसे बड़े अभियान के तौर पर इसे लगाया भी गया जो क्रम अभी जारी है। लेकिन, सुरक्षित उपायों को अपनाते रहना है, जिसके लिए आप सभी अपना सहयोग देते रहेंगे।

हिमाचल को वीर भूमि भी कहा जाता है। राज्य के कई सपूतों ने रक्षा सेवाओं में वीरता का प्रदर्शन कर प्रदेश का नाम ऊंचा किया है। उनके बलिदान से जहां हम अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करते हैं, वहीं आज के दिन हम उन वीरों को श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं।

इस पावन अवसर पर हम सभी प्रतिज्ञा लें कि राज्य के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित होकर रचनात्मक योगदान दें।

मैं कामना करता हूँ कि यह दिवस सभी हिमाचलवासियों के जीवन में नई उमंग और खुशियां लाये।

(बंडारू दत्तात्रेय)

कोरोना वायरस से बचाव के लिए हाथों को सेनेटाइज करें

लेख

समाज में कविता का महत्त्व

किसी विस्तृत विषय को नन्हें नन्हें मार्मिक शब्द रूपी मोतियों में पिरोना कविता कहलाता है। कहते हैं कि कवि की कल्पना असीम होती है और कवि किसी भी भाव को शब्दों के आकार में ढाल कर एक माला के रूप में दुनिया के सामने प्रस्तुत करता है। कविता मनुष्य के हृदय को करुणामय स्वार्थ-संबंधों के संकुचित मंडल से ऊपर उठा कर लोक-सामान्य भाव-भूमि पर ले जाती है जहां पर हर इंसान खुद को कहीं न कहीं अपना रूप पाता है। कविता एक व्यवसाय है जिसमें कवि दुनिया की मानसिकता को खरीद कर अपने अंदाज में दुनिया के दिलों के बाजार में पेश करता है। आदि काल से कविता को समस्त जगत में शौक से सुना और सराहा जाता है। किसी भी बात को लय में यानी कविता

✎ राकेश मिन्हास

के रूप में कहा जाए तो उसका प्रभाव अधिक होता है। लेकिन वही कविता तरन्नुम में पेश हो जाए तो सोने पर सुहागा।

कविता साहित्य की एक विधा है। कविता कवि के मानसिक सौंदर्य की अभिव्यक्ति है। कवि की व्यथा की अनुभूति है कविता। कवि की आकांक्षाओं- अपेक्षाओं की अभिव्यक्ति है। कविता लिखते समय जिस भाव के साथ लिखी जाती है यदि पढ़ने वाला भी उसे उसी अर्थ और भाव के साथ समझ सके तो कविता लिखने का उद्देश्य सार्थक हो जाता है। कविता का कुछ उचित चुने हुए शब्दों से सृजन होता है जो हमारे मन के भावों के जीवंत रूप होते हैं। मन के भावों को निकाल कर कागज पर समेटना ही कविता है।

एक साक्षात्कार में पंजाबी भाषा के महान कवि शिव कुमार बटालबी ने कहा था कि कविता किसी हादसे से पैदा नहीं होती है। उनके अनुसार भी कविता मानसिक कृतियों और विकृतियों का एक संग्रह है जो समाज में फैल रहे घटनाक्रम को संयोजित कर पेश किया जाता है। प्राचीन काल में कबीर, रहीम और तुलसीदास ने दोहों के माध्यम से कम से कम शब्दों में जीवन का सार प्रस्तुत कर दुनिया का मार्गदर्शन किया। हिंदी साहित्य के इतिहास में कबीर, रहीम और तुलसीदास एक चमकीले नक्षत्र के रूप में आज भी याद किए जाते हैं। उनके लिखे दोहों को आज भी इंसान अपने लिये सही मार्ग तलाशने के लिए इस्तेमाल करता है।

भारत के स्वतंत्रता के आंदोलन में हिंदी कवियों के ओजस्वी उद्गारों तथा उनसे मिली प्रेरणा ने अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। बाबू हरिशचंद्र ने भारत दुर्दशा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अपनी राष्ट्रीय रचनाओं के कारण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय अत्यंत लोकप्रिय रहे। उनकी भारत-भारती संपूर्ण भारतवर्ष में गूंज उठी थी। उससे अनेक स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने विशेष प्रेरणा प्राप्त की थी। पं. माखन लाल चतुर्वेदी की कविताओं ने भी स्वतंत्रता सेनानियों के हृदय में राष्ट्र प्रेम की भावना जाग्रत की थी। इसके अतिरिक्त पं. रामनरेश त्रिपाठी, महाकवि जयशंकर प्रसाद , श्री जगदंबा प्रसाद मिश्र ‘हितैषी’, कविवर श्यामलाल गुप्त ‘पार्षद’, बद्रीनारायण चौधरी ‘प्रेमधन’ और प्रताप नारायण मिश्र आदि अनेक कवियों ने अपने शब्दों से क्रांतिकारियों के दिल में राष्ट्र प्रेम को जागृत किया। सुभद्रा कुमारी चौहान की झांसी की रानी रचना का भी स्वाधीनता आंदोलन में विशिष्ठ योगदान रहा है।

1962 में भारत-चीन युद्ध में मारे गए भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि देने के लिए कवि प्रदीप के शब्दों ‘ऐ मेरे वतन के लोगो, जरा आंख में भर लो पानी’ को लता मंगेशकर ने कुछ ऐसे गाया है कि सुनने वालों की आंखों में आंसू आ जाते हैं। अगर हिमाचल की बात करें तो बाबा कांशी राम जो पहाड़ी गांधी के नाम से मशहूर थे, उन्होंने बहुत छोटी उम्र में ही यह जान लिया था कि गीत और कविता से राष्ट्र भक्ति का संदेश अनपढ़ से अनपढ़ व्यक्ति और घर-घर तक सरलता से पहुंचाया जा सकता है और उन्होंने देश भर में घूम-घूम कर अपनी देश भक्ति की कविताएं गा कर लोगों में देश भक्ति की भावना भरी।

> **1962 में भारत-चीन युद्ध में मारे गए भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि देने के लिए कवि प्रदीप के शब्दों 'ऐ मेरे वतन के लोगो, जरा आंख में भर लो पानी' को लता मंगेशकर ने कुछ ऐसे गाया है कि सुनने वालों की आंखों में आंसू आ जाते हैं। अगर हिमाचल की बात करें तो बाबा कांशी राम जो पहाड़ी गांधी के नाम से मशहूर थे, उन्होंने बहुत छोटी उम्र में ही यह जान लिया था कि गीत और कविता से राष्ट्र भक्ति का संदेश अनपढ़ से अनपढ़ व्यक्ति और घर-घर तक सरलता से पहुंचाया जा सकता है।**

हिमाचल का प्राकृतिक सौंदर्य तो खुद ही किसी कविता से कम नहीं है। यहां की नदियां, झरने, पहाड़, चौगान और शीतल हवा खुद ही किसी गजल से कम नहीं हैं। इस सौंदर्य में रह कर हिमाचली कुछ न लिखें ऐसा कभी हो ही नहीं सकता है। हिमाचल में साहित्यकारों और कवियों की बहुत बड़ी जमात है। पूर्व मुख्यमंत्री आदरणीय शांता कुमार राजनेता होने के साथ महान लेखक और कवि हैं जिनकी लेखन में महारत हासिल है। उनके द्वारा रचित ‘ मृगतृष्णा ’ और ‘ लाजो’ राजेन्द्र पालमपुरी जी का उर्दू में लघु उपन्यास ‘तवायफ ’ और कहानी ‘टूटे सपने’ समाचार पत्रों और पाठकों में मुख्य आकर्षण रही हैं। बरसों पहले राजेन्द्र पालमपुरी जी की कांगड़ी बोली की कविता - जे मैं बणजारा ई हूंदा गोरियां हत्थां चढ़ांदा बंगां - ने आम पहाड़ी आदमी पर अपना जादू चलाने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है। वह आज एक स्थापित साहित्यकार, कहानीकार और कवि हैं जिन्होंने असंख्य लेख, लघु कहानियां और बाल कविताएं लिखी हैं। इसके अतिरिक्त त्योहारों और मेलों के अवसरों पर इनके प्रकाशित लेख और कविताएं आम पाठकों में आकर्षण रहती हैं। बाल कविता में तो इन्हें महारत हासिल है। जिला कांगड़ा में ही अनेक कवि और साहित्यकार हैं जिनमें डॉक्टर सुशील कुमार फुल्ल, सुमन सच्चर, सरोज परमार, अशोक सरीन और शक्ति चंद राणा आदि अनेकों नाम शामिल हैं।

कविता के बहुत से रूप और रस हैं। संस्कृत में कहा गया है कि - ‘ रसात्मकम् वाक्यम् काव्यम्’ अर्थात् रसयुक्त वाक्य ही काव्य है। सुंदरता को बयान करता श्रृंगार रस, हंसी को व्यक्त करता हास्य रस, शौक रूपी करुण रस, क्रोध को दर्शाता रौद्र रस और उत्साह को समेटता बीर रस। कविता के पठन में जो अलौकिक आनंद प्राप्त होता है वही कविता का रस कहलाता है।

दुनिया और देश के हर भाग और हर सभ्यता में कविता का महान योगदान है। कवि देश की धरोहर हैं जो अपने मन में उत्पन्न विचारों को और समाज में हो रही घटनाओं को शब्दों में ढाल कर लोगों के दिलों में उतरने का हुनर रखते हैं। कवि अपनी आवाज को बेबाकी से रखने की हिम्मत रखता है समाज को आईना दिखाता रहता है। यद्यपि आज की युवा पीढ़ी आधुनिक यंत्रों में खोकर और भावनात्मक न हो कर कविता से दूर जाती दिख रही है। जरूरत है कविता रूपी विरासत को संजोए रखने की। **‘सुर कहां से आएगा, ताल कौन गाएगा, कवि नहीं रहे तो माहौल कौन बनाएगा’**....और सच्चाई यही है। इसलिये कविता लिखें, कविता पढ़ें और कविता समझें। ताकि हम सब काव्यात्मक गतिविधियों का हिस्सा बनकर खुद और समाज को कविता से सुगंधित कर सकें, महका सकें।

कविता

हे ! मेरे हिमाचल

जब भी आंख खुले
दीदार
तेरा ही पाऊं मैं,
तेरी सुंदर हरि-भरी वादियों में
खो जाऊं मैं......,

हे मेरे हिमाचल
तू फले-फूले
निसदिन तेरी तरक्की की
कामना करती ईश्वर से
तेरा ही सुमिरन गाऊं मैं...,

धन-धन हैं वो लोग महान
जिन्होंने बनाया संवारा
तुझे....,
उन्नति के शिखर तक
पहुंचाऊं मैं.....,

कण्ठ-कण्ठ गुणगान करे
जन-जन तेरा आभार करे
देवधरा पर....
शांतिदूत बनकर
चहूं ओर सुख-खुशहाली
फैलाऊं मैं...।

अमन की फिजाओं में
खुली साफ हवाओं में
लोकगीतों के संग
संस्कृति के रंग

जग-जग में
बिखराऊं मैं.....

हे मेरे हिमाचल....।
वीर भूमि तेरी
यहां वीरों के आगे....
नतमस्तक होता गगन
चांद-सितारे करते...,
शत शत नमन कर;
शीश अपना झुकाऊं मैं...,

देख-देख छटा प्रकृति की,
ओढ़कर चादर श्वेत मखमली
बर्फ की कहीं...
पर्वतों के शिखरों को चूमता
छ: ऋतुयें श्रृंगार कर....देख
तुझे, अलकों में बिठाकर
पल पल इतराऊं मैं....,

इन्हीं मनोरम वादियों-घाटियों को
देखने आते जब-जब
सैलानी......
स्वर्ग से भी सुंदर है
मेरा हिमाचल प्रदेश
लिख-लिख कर
कविता गीत ग़ज़ल प्रीत राग
सबको सुनाऊं मैं...।

✎ वदंना राणा

सामान्य ज्ञान

न्यूनतम समर्थन मूल्य क्या है?

न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी), भारत सरकार द्वारा कुछ फसलों के लिए तय की गई कीमत है। सरकार किसानों से इस कीमत पर कई कृषि उत्पादों को खरीदती है। यह प्रणाली किसानों के लिए सुरक्षा कवच का काम करती है। इस तरह बाजार की अनिश्चितता से किसानों के कारोबारी हितों की सुरक्षा की जाती है। बाजार की गतिविधियों और प्राकृतिक आपदाओं की वजह से अनिश्चितता की स्थिति पैदा होती है। भारत सरकार हर फसल मौसम की शुरूआत में खरीफ और रबी की कुल 23 फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य के लिए अधिसूचना जारी करती है।

1 देश के 48वें मुख्य न्यायाधीश कौन नियुक्त किए गए हैं ?
2 उज्जैन का प्राचीन नाम क्या है ?
3 बंधुआ मजदूर (उन्मूलन) अधिनियम संसद ने कब पारित किया था ?
4 सुन्दरवन डेल्टा का निर्माण कौन सी नदियां करती है ?
5 अपने प्रदूषकों के कारण कौन सी नदी ‘जैविक मरुस्थल’ कहलाती है ?
6 अनुवांशिक रोग ‘थैलेसीमिया’ मुख्य रूप से किसे प्रभावित करता है ?
7 मैराथन दौड़ की दूरी कितनी होती है ?
8 रबी फसलों की बुआई किन महीनों में की जाती है ?
9. हिमाचल में स्थित प्रमुख गुरुद्वारों पावंटा साहिब और रिवालसर साहिब का सम्बन्ध किस सिख गुरु से है ?
10. ‘गैरु’ दर्रा हिमाचल के किस जिले में स्थित है ?
11. ‘लेडी ऑफ केलंग’ हिमनद किस जिले में स्थित है ?
12. ‘कत्थी’ हिमाचल के किस भाग का लोकप्रिय नृत्य है ?
13. एशियाई क्रिकेट परिषद् के वर्तमान अध्यक्ष कौन है ?
14. भारत में पहला पेपरलेस बजट प्रस्तुत करने वाला राज्य कौन सा है ?
15. पश्चिम बंगाल में विधान सभा की कुल सीटें कितनी हैं ?

प्रस्तुति : विवेक शर्मा

उत्तर– 1. जस्टिस एनवी रमन, 2. अवन्तिका, 3. वर्ष 1976, 4. गंगा और ब्रह्मपुत्र, 5. दामोदर नदी, 6. रक्त, 7. 42.195 कि.मी., 8. अक्तूबर-नवम्बर, 9. दशम गुरु गोबिंद सिंह, 10. कांगड़ा, 11. लाहौल-स्पीति, 12. कुल्लू, 13. जय शाह, 14. उत्तर प्रदेश, 15. 294 ।

व्यंग्य

कल्पना बड़े काम की चीज है

किसी भी समस्या को हल करने का सबसे सुरक्षित और सफल हथियार कल्पना है। कल्पना कोई भी काम कहीं भी बैठे निबटा सकती है। संक्रमण काल में अनुशासन के कारण घर बैठे-बैठे कल्पना के पौधे इतने उग गए कि फेसबुक, व्ट्सेप के खेत अभी तक लहलहा रहे हैं। कल्पना कुछ भी करवा सकती है, जैसे हम यह मान सकते हैं कि आम आदमी को सड़क, खेत, झोंपड़ी, आश्रम, शिविर या खोली में कभी-कभी खाने को मिलता रहे तो वह हमेशा जीवित रह सकता है। सर्दी के मौसम में छोटे से कमरे में आठ दस व्यक्ति, पानी रहित शौचालय, साबुन रहित, बिना नहाए व हाथ धोए ज्यादा दुःखी हुए साथ में रह सकते हैं।

यह आर्थिक कल्पना की वास्तविक उड़ान है कि कुछ हजार रुपए उनके लिए काफी होते हैं। क्योंकि उनके सादा, सरल जीवन को सामान्य रूप से जीने के लिए ज्यादा चीजों की जरूरत नहीं। यह लघुकल्पना भी सकारात्मक है कि स्थिति ठीक होती ही कुछ न कुछ रोजगार मिल ही जाएगा, विकट समय में किए गए वायदे पूरे किए जाएंगे। ‘कल्पना कीजिए और सुखी रहिए’ बेहद सफल सामाजिक योजना है। भूख से सहमी हुई खबरें देखकर हम यह कल्पना कर सकते हैं कि सभी को भरपेट खाना मिलता रहे तो कितनी अच्छी दुनिया हो। क्या हर्ज है अगर हम यह अनुमान लगा लें कि हमारे चैनल निष्पक्ष होकर सामाजिक मुद्दों की उचित आवाज बन गए हैं।

> **‘कल्पना कीजिए और सुखी रहिए’ बेहद सफल सामाजिक योजना है। भूख से सहमी हुई खबरें देखकर हम यह कल्पना कर सकते हैं कि सभी को भरपेट खाना मिलता रहे तो कितनी अच्छी दुनिया हो। क्या हर्ज है अगर हम यह अनुमान लगा लें कि हमारे चैनल निष्पक्ष होकर सामाजिक मुद्दों की उचित आवाज बन गए हैं।**

महामारी की स्थिति में भी कर्मठ राजनेता राजनीति बिल्कुल नहीं कर रहे। धार्मिक नेता, मानवता, सदभाव, समानता व सहृदयता की जबान बोल रहे हैं। नैतिकता झूम झूम कर सभ्य, सांस्कृतिक नृत्य कर रही है। कलाकार केवल धन अर्जन के लिए नहीं बेहतर सामाजिक बदलावों के लिए जुट गए हैं। यह वास्तविकता नहीं बलिक कल्पना की ही शक्ति है जिसके आधार पर हम देशभक्त, राष्ट्रवादी, नैतिकतावादी, समाजवादी, लोकतांत्रिक, कर्मठ और ईमानदार हो सकते हैं।

यह भी जाना बुझा तथ्य है कि कल्पना दर्द की कहानी को आसानी से आंकड़ों में तब्दील कर सकती है। यह कार्य हमारे विशेषज्ञ बेहतर तरीके से निरंतर करते हैं। यह कल्पना का ठोस धरातल ही है जिस पर प्रेमी अपनी प्रेमिका, भावी पति अपनी भावी पत्नी के लिए सदियों से बार-बार कितने तरह के चांद उतार लाया है। असली फूल भी तो उन्हें कल्पना लोक में ही ले जाते हैं। क्या पत्थर में ईश्वर की मान्यता की रचना इंसान की कल्पना का नायाब उदाहरण नहीं। वास्तविकता तो हर एक कठिनाई को मुसीबत में बदल देती है, दुःख के कचरे में गिरे हुए भी हम सुवासित सुख की कल्पना करते हैं। बातों बातों में साबित हो गया न कि कल्पना बड़े काम की चीज है, ये बे-दाग बे-दाम की चीज है।

✎ प्रभात कुमार

बाल कहानी

बाढ़

डॉ. शशि गोयल

'**चलो** बाढ़ देखने चलते हैं पुल को छू लिया है पानी ने' पापा ने जब बताया तो प्रांशी और मुनमुन उत्साहित हो उठे। 'हां पापा चलो पानी देखने चलें।' मुनमुन पहली बार बाढ़ देखने जा रहा था।

'मम्मी बैग में चिप्स रख लूं।' प्रांशी बोली तो मुनमुन दौड़कर मूंगफली भी उठा लाया।

'मछलियों के लिये आटा ले लूं। गोली डाल दूंगी तो बच्चे पास से मछली देख लेंगे।'

मछली ....सुनकर मुनमुन का मुंह खुला का खुला रह गया।

'हां मछली' कहती मां जल्दी से कटोरे में आटा गूंथने लगीं। अब तो मुनमुन का उत्साह दोगुना हो गया वह कूदने लगा।' वाह! वाह! बाढ़ देखने जायेंगे।'

' पता भी है बाढ़ क्या होती है ? ऐसे कूद रहा है जैसे न जाने कितनी अच्छी चीज देखने जा रहा है।' मां ने कहा 'और क्या मम्मी चारों ओर पानी ही पानी जमुना किनारे के बाजार में पानी आ गया है। वहां मेरा एक फ्रेंड आशु रहता है। वह बता रहा था। नाव में बैठ्कर बस तक आया। उसके घर में सांप भी आ गए थे। उसके पापा ने लठियों से उन्हें वापस पानी में डाला आशु बता रहा था। बार-बार नाव में बैठ कर आना-जाना होता है। न मम्मी कितनी मजे की बात।' मुनमुन उत्साहित होकर बताता जा रहा था।

मां उसे देखती रही कुछ देर फिर बोली, 'तुम्हें पता है बाढ़ से क्या-क्या खराबी हो जाती है ?'

'क्या खराबी होती है ? आशु को तो बहुत मजा आ रहा है। वह तो सारा दिन घर की बालकनी से देखता झांकता रहता है। बहुत सारी बातें बताता जा रहा था। एक दिन तो एक कमरा ही बहता जा रहा था। एक झोंपड़ी पर तीन लोग बैठे थे वे बह रहे थे। कितना मजा आ रहा था देखने में। मोटर बोट तेजी से चलती रहती है। और उसमें बैठ-बैठ कर आदमी आते है।' अच्छा चलो पुल से देखेंगे। गाड़ी का रास्ता बंद था। दो रिक्शों में बैठकर मुनमुन के चाचा-चाची, मम्मी-पापा और बहन प्रांशी पुल पर गये। दूर-दूर तक पानी ही पानी था। जमुना पुल से थोड़ा नीचे लगी बह रही थी। मां ने आटे की गोली बनाकर डाली तो मछलियां लपकने लगी कभी बड़ी ो कभी छोटी मछली उन गोलियों को लपकने के लिए ऊपर आती।

मुनमुन और प्रांशी मछलियों को देख-देख कर उछल रहे थे। कभी इधर-उधर भाग कर वो ऊपर आती मछलियों को देख रहे थे। छोटी- छोटी मछलियां तो उन्होंने मछली घर में देखी थी। उनके दोस्त शिशिर के घर काफी बड़ा सा मछली का केस (Aquarium) था। उसमें सात लाल मछलियां और एक काली मछली थी। छः-सात इंच की। एक केकड़ा भी था। बहुत सारे शंख सीपी रखे थे। वो शिशिर के घर जाता तो काफी समय मछलियां देखने में बिता देता था।

'मम्मी-मम्मी देखो-देखो वो बड़ी सी मछली', तभी पुल के नीचे एक कुर्सी एक बच्चा गाड़ी और एक अलमारी बहती दिखी। वाह! वाह! इस कुर्सी पर बैठ जाऊं तो कितना मजा आयेगा।' मुनमुन उत्साह से बोला,' अरे मैं तो इस गाड़ी में बैठूंगा। प्रांशी हाथ बढ़ाने लगी जबकि पुल से करीब एक फुट नीचे पानी था। मम्मी ने उसका हाथ खींचा और बोला ' देखो बच्चों हाथ ऊपर रखो, पैर भी मत निकालो यह जो साथ में बह रहा है पता है क्या है ?' बच्चे मां का मुंह देखने लगे।

यह घड़ियाल है घड़ियाल। बच्चे घड़ियाल समझ नहीं पाये तो बोली, 'तुमने मगर और हाथी की लड़ाई की कहानी में चित्र देखा है न अरे पिछले साल जब चिड़ियाघर देखने गये थे तो मगर देखा था न वैसा ही घड़ियाल होता है। मगर का मुंह आगे से चौड़ा होता है घड़ियाल का पतला और बस यह थूंथनी ऊपर रहती हैं फटाक से शिकार खींच ले जाता है ' प्रांशी सहम गई और अपना हाथ दूसरे हाथ से सहलाने लगी।

'बताओ कितनी बरबादी हुई है, कितने घर उजड़ गये, कैसे-कैसे घर बनाया होगा ? एक पल में बरबाद हो गया होगा।'

मां को दुःखी देख दोनों सहम गये पापा और चाचा-चाची भी चुप से दूर-दूर तक खेतों में फैले पानी को देख रहे थे।

भाई साहब बड़े-बड़े पेड़ भी बह रहे है।

'पापा अरे-अरे उस पेड़ पर तो कोई बैठा है पापा' बच्चे चिल्लाये।

हां है एक आदमी हाथ ऊपर किये चिल्ला रहा था पर बहते पानी के शोर में उसकी आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। पर हां वह दिख गया था। तभी उन्होंने देखा एक मोटर बोट तेजी से उस पेड़ की ओर बढ़ रही है।

'देखो बचाने की कोशिश हो रही है। पर चारों ओर पानी बहुत तेजी से बह रहा है। इससे ज्यादा मुश्किल होगी में पानी उतरने की,' चाची ने दूसरी तरफ झांकते हुए कहा।

'हां, 'मम्मी बोली तब होगें मच्छर आदि बीमारियां फैलेगीं मुझे तो उन गांवों की बड़ी चिन्ता है जो डूब गये।' ' चलो अब वापस चलें। कहते हुए मम्मी ने प्रांशी का हाथ पकड़ लिया।

इसके साथ ही सब लौट लिये। उन्होंने रास्ते में से कुछ हरे पौधे, पत्तियां, घास व मिट्टी एकत्रित की। आज जाकर घर बनायेंगे छप्पर वाला जैसा बहता देखा था, मुनमुन ने उत्साह से कहा।

आदमी कहां से लायेंगे ? प्रांशी बोली मिट्टी से बनायेंगे.... दो तीन बनायेगें।

ऊंचे चढ़ते ही बाजार में खाने-पीने का सामान था। लिया खाया और वापस आये। बच्चे मगन थे, बड़ी अच्छी पिकनिक रही, खूब मछली कछुआ देखे। घड़ियाल पूरा नहीं देखा। केवल थूथनी ही दिखी थी पर देखा तो था ही फिर ऊपर से चाट पकौड़ी खाई। दोपहर को भी आपस में सब बाढ़ का जिक्र करते रहे। बहुत मजा आया था । शाम को टी.वी. में समाचार आया कि नदी किनारे के बहुत से मकान गिर गये और जान माल का काफी नुकसान हुआ है। इसके अलावा अन्य कई शहरों में बाढ़ का पानी घुस गया है। सरकार नुकसान का आंकलन कर रही है। मंत्री जी बाढ़ की स्थिति का निरीक्षण कर रहे हैं। धर्र-धर्र हेलीकॉप्टर उड़ता दिखाई दे रहा था। बच्चे अपने खिलौने उठा लाये। साथ ही गमलों से मिट्टी और गैलरी में रखे लकड़ी के गट्टे उठा लाये। 'ये देख यह खेत बना' कहकर मुनमुन ने घास बिछाकर मिट्टी चारों ओर रख दी। फिर गट्टे को रखकर उसने कुंआ बनाया। इतने में प्रांशी खिलौनो में से रखे तरह-तरह के ब्लॉक से मकान बनाने लगी। अभी मकान अधूरा ही था कि मां के हाथ से बाल्टी का पानी लुढ़क गया और मकान टूट गया।

'ये क्या मां कितनी मेहनत से बनाया था' प्रांशी का मुंह उतर गया। कोई बात नहीं बेटा आपके पास तो गट्टे हैं फिर से बना लो।' मां ने लापरवाही से कहा चलो उठो जगह साफ कर दूं।' फिर बना लेना क्या आसान है मां ? फिर घास और मिट्टी लानी पड़ेगी। मुनमुन ने गट्टों को उठाते हुए कहा,' सब भीग गये।'

'ओ हो मां ये आदमी तो गल गये चल छोड़ मुनमुन', प्रांशी हाथ झाड़ती उठ गई सारी मेहनत पर पानी फिर गया मुनमुन बड़बड़ाया।

' अच्छा यहीं से बना है मुहावरा , 'किये कराये पर पानी फिरना' पापा हंसते हुए बोले तो मुनमुन खिसिया गया।

पापा ....आप हंस रहे हैं।'

'अच्छा यहां आओ कुछ बात करनी है। मेरे पास आओ पापा ने कहा। तब तक मम्मी भी वहां आ गई और बोली, ' बेटा पानी मैंने आप जानकर फैलाया था आप लोगों को जरा सा एहसास कराने के लिये कि कैसी होता है जब हमारा किया धरा खत्म हो जाय। यहां आप तो जरा सी मेहनत करोगे और फिर से उसे बना लोगे नहीं भी बनाओगे तो आपका तो दो घंटे का मनोरंजन था लेकिन उस गांव का बह जाना मतलब उस गांव के हर आदमी की जिंदगी भर की कमाई, जोड़ा हुआ, बनाया हुआ पल भर में बह गया। वह क्या करेगा ? आप लोगों को बाढ़ देखकर आनन्द आ रहा था पर हजारों आदमी बेघर हो गये थे, उनसे उनका दुःख पूछो।

यद्यपि मुनमुन प्रांशी को कुछ-कुछ ही समझ आ रहा था पर फिर वह दोनों भी कुछ तो समझ ही गये थे। अब हम कल उन गांव वालों के लिये खाना, कपड़ा और सामान देने जायेगें। आप चलोगे ? हां मां मैं थोड़े से अपने खिलौने भी ले चलूं। मां वहां छोटे बच्चे भी होंगें न, उनका सामान भी तो बह गया होगा ? हां बच्चों बिलकुल ठीक। जरूर ले चलना। अपने हाथ से देना और देखना उन्हें किस चीज की जरूरत है। बेटा हम पूरे गांव को तो नही दे पायेगें पर अगर हर घर एक-एक परिवार की खड़े होने में मदद कर दें तो वे सब फिर से बस जायेंगें।

बाल कविता

बिजूका

एक आदमी टकला और लंबा,
देख मुझको हुआ अचंभा।

खड़ा खेत में बांहें फैला कर,
मुझको आई हंसी पल भर।

पापा भी देख मुस्कुराने लगे,
फिर मुझको समझाने लगे।

लोग इसे बिजूका कहते,
यह ऐसे ही खड़े रहते।

भले कोई न हरकत करते,
पशु, पक्षी पर इनसे डरते।

इन्हें असली मानव जान,
फसलों का न करते नुकसान।

खतों की ऐसे होती रखवाली,
किसान ने है तरकीब निकाली।

हरिन्दर सिंह गोगना

स्नेह, संवाद से अच्छी परवरिश

माता-पिता दोनों की अपनी- अपनी भूमिका बच्चों की परवरिश के लिये जरूरी होती है। माता की भूमिका यदि बच्चों को स्नेह-पोषण देने के लिए महत्त्वपूर्ण होती है तो पिता की भूमिका उन्हें सुरक्षा, सुविधा जुटाने, उन्हें हर प्रकार के सहयोग प्रदान करने की होती है। इसलिए माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों के लिए पर्याप्त समय निकाले, उनसे बातचीत करे उनकी समस्याएं व परेशानियों को धैर्यपूर्वक सुने व उनका यथोचित समाधान करे।

डॉ. रामसिंह यादव

बच्चों की परवरिश का राज माता-पिता के आंचल में विशेषकर मां की छांव में छिपा हुआ है। वैसे तो माता-पिता दोनों ही बच्चों की सही परवरिश के लिये एक जरूरी कड़ी होते हैं। जिस तरह बिना मां के बच्चों के व्यवहार पर कई तरह के नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं, उसी तरह बिना पिता के भी बच्चों के विकास पर विपरीत असर होता है।

दरअसल पिता के बिना बच्चों के आत्मविश्वास में कमी बनी रहती है ऐसे बच्चे तुरन्त निर्णय लेने में संकोच करते हैं वे प्रायः दूसरों का अनुसरण करते हैं और अपने फैसलों के लिये भी दूसरों के निर्णय पर निर्भर रहते हैं। इसलिए बच्चों के सही पालन- पोषण का दायित्व दोनों की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है। लेकिन फिर भी बच्चों की परवरिश में माता जो स्नेह बच्चों पर लुटाती है, जितना उनका ध्यान रखती है, उसके कारण बच्चों को हमेशा ही मां की जरूरत अधिक महसूस होती है।

मां शब्द ही ऐसा है जिसे किसी परिभाषा के दायरे में नहीं बांधा जा सकता और न ही मां के प्यार को एहसान माना जा सकता है, क्योंकि मां जो भी अपने बच्चों के लिये करती है उसे कोई और नहीं कर सकता, इसलिए उसकी कमी को कोई भी पूरा नहीं कर सकता। मां के लिए यदि संभव हो तो वह अपने बच्चों के लिए आसमान के तारे तोड़कर भी ले आए। यही कारण है कि असल में इस पूरे संसार में मां से ज्यादा अपने बच्चों को प्यार करने वाला कोई दूसरा नहीं होता है।

वर्तमान में काम-काज के चलते समाज में माताओं की भूमिका कुछ अलग होती जा रही है। जो महिलाएं कामकाजी है वे ऑफिस एवं घर के काम-काज को करने, उनके बीच सामंजस्य बैठाने के प्रयास में कहीं न कहीं अपने बच्चों को पूरा समय नहीं दे पाती। इसका मतलब यह नहीं कि वे अपने बच्चों को समय नहीं देना चाहती, भले ही उनकी जिन्दगी में कई तरह की जिम्मेदारियां हों, इसके बावजूद माताएं अक्सर अपने बच्चों को उतना समय अवश्य देती है या देने की कोशिश करती है जितनी बच्चों को जरूरत है।

बच्चों की बेहतर परवरिश के लिये उनके साथ मां का आंचल हमेशा बना होना चाहिए और इस बात को कामकाजी महिलाएं अच्छी तरह समझती है। इसलिए जहां तक संभव होता है वे अपने बच्चों को लेकर लापरवाही नहीं बरतती और न ही अपनी जिम्मेदारी से मुंह फेरती है। मां के बिना बच्चों की सही परवरिश होना लगभग नामुमकिन है। हालांकि कई ऐसे बच्चे हैं जिनकी परवरिश मां के बिना होती है लेकिन यह बात भी किसी से छिपी नहीं है कि ऐसे बच्चों के साथ कई तरह की समस्याएं भी देखने को मिलती है। उदाहरण के लिये मां के बिना ज्यादातर बच्चे लापरवाह और चिड़चिड़े स्वभाव के हो जाते हैं, मनमानी करते हैं, जरा-जरा सी बात पर झगड़ते और उनमें इसी कारण एकाग्रता की कमी देखी जाती है।

बच्चों की उम्र बढ़ने के साथ मां अपने बच्चों के साथ रिश्ते में अपनी भूमिकाएं बढ़ाती है। पहले वह अपने बच्चों के साथ बच्चा बनकर व्यवहार करती है, तो उनके बड़े होने पर उनके साथ धीरे-धीरे दोस्ताना व्यवहार भी करती है। इस तरह मां बच्चों का रिश्ता होने के साथ-साथ बच्चों का अपनी मां के साथ एक दोस्त का रिश्ता भी हो जाता है। पिता यदि अपने बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते तो मां ही अपने बच्चों के लिये पिता की भूमिका भी अदा करती है।

इस तरह वह अपने बच्चों के साथ एक अनोखा रिश्ता बना लेती है। यही कारण है कि बच्चे अपनी माता से अपने दिन भर की घटनाओं की चर्चा करने में संकोच नहीं करते हैं। किसी भी तरह की परेशानी या मुसीबत होने पर अपनी मां से खुलकर उसे बता देते हैं। यही कारण है कि मां हमेशा पिता की तुलना में बच्चों के ज्यादा करीब होती है।

बच्चों की उम्र बढ़ने के साथ अपनी कई जिम्मेदारियां एक साथ निभाते हुए माताओं को यह ध्यान रखना चाहिए कि वक्त की कमी के कारण वे अपने बच्चों को चाहतों व जरूरतों को दरकिनार न करे। उन्हें समय के साथ समझने का प्रयास करें और उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखें। कई बार माता-पिता बच्चों की आवश्यकताएं व जरूरतें पूरी करते हैं, लेकिन उनके बच्चे यह महसूस नहीं कर पाते कि उनके अभिभावक उनका अच्छे से ध्यान रखते हैं और उन्हें भरपूर प्यार करते हैं।

जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, वे अपनी तुलना दूसरों से करने लगते हैं। यदि कहीं उन्हें यह देखने में आता है कि उनके मित्रों को उनके अभिभावक अधिक प्यार करते हैं, जबकि उनके खुद के अभिभावक उन्हें उतना प्यार व देखभाल नहीं करते तो वे ईर्ष्या से भर जाते हैं और इस बात का उनके व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

माता-पिता दोनों की अपनी-अपनी भूमिका बच्चों की परवरिश के लिये जरूरी होती है। माता की भूमिका यदि बच्चों को स्नेह-पोषण देने के लिये महत्त्वपूर्ण होती है तो पिता की भूमिका उन्हें सुरक्षा, सुविधा जुटाने, उन्हें हर प्रकार के सहयोग प्रदान करने की होती है।

ऐसे कई बच्चे होते हैं जिनकी मां नहीं होती या जिनके पिता नहीं होते। ऐसी स्थिति में मां या पिता दोनों की भूमिकाएं किसी एक को ही निभानी होती है ताकि बच्चों की सही ढंग से परवरिश हो सके। बच्चों को माता-पिता के साथ बातें करने का समय मिलना चाहिए ताकि वे अपनी हर आवश्यकता को उनके सामने निःसंकोच रख सके।

इससे न केवल बच्चों में सुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है बल्कि यह उनके सर्वांगीण विकास के लिए भी अपरिहार्य है। इसलिए माता- पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों के लिये पर्याप्त समय निकाले, उनसे बातचीत करे उनकी समस्याएं व परेशानियों को धैर्यपूर्वक सुने व उनका यथोचित समाधान करे। अपनी परेशानियों व तनाव के कारण आने वाले गुस्से व खीज को अपने बच्चों पर न उतारे बल्कि बच्चों के साथ घुलमिल कर अपनी परेशानियों से नाता तोड़ लें और बच्चों के साथ अपने रिश्ते को मजबूत व विश्वसनीय बनाए।

पहाड़ी भाषा कनै साहित्य लोक मंच

गिरिराज साप्ताहिक, शिमला, 21 अप्रैल, 2021

कहाणी

समझदार कुण

माहणुए रा अपणा कम्म करने रा तरीका होर टाल मटोल करने रा स्वभाव वी कअई दफा नुक्सान करी देयां। पुराने जमाने री गल्ल ई। इक ग्रांये च कईयां जआतीं-धरमा रे लोक रहयां थे। सभ अपणे-अपणे पुश्तयनी कम्म करीके गुजर बसर करां थे। ग्रायें च इक कम्हार वी रहयां था। सैह चिक्का रे भाण्डे बरतन होर दीऊए, कुअज्जू घहड़े बणाई के अपणी रोजी रोटी कमावां था।

कई दफा सैह कम्हार शहरा पआसे वी बेचणे खातर निकली जावां थे तिसते जे चार पईसे नकद वी वणी जावां थे। माराज ग्रायें रे लोक तां दाणेयां रे बअटे भआन्डे लवां थे। इक ध्याड़े सैह बाजारा च भआन्डे बेची के वापस आऊणे लगुरा था होर तिसरी नजर रस्ते च पईरी इक चमकदीया चींजा पर पअईगी। तिन्हे कम्हारे पत्थर-गअटु समझी के चकया होर सोचणे लगया पई कहरें ऐह गअटु भाजेयां रे खेलणे रे कम्मा आऊणा।

कम्हारे रे मन्ना च पता नीं क्या सुझया होर तिन्हे सैह गअटु रस्सीया ने बअनी के अपणे गअदे रे गअला च लटकाई दीतयाकने अपणे रस्ते जो चलदा रहया। चमकणे वआला गअटु दरअसल च हीअरा था पर तिस अणजाअणा जो कुअछ पता नीं था। रस्ते च चलदेया तिस कम्हारे जो इक माहणु मिलया। तिसजो हीअरे रे परख थी। तिन्हे गअटे रे गअले च लटकी रा पत्थर-गअटु देक्खया होर सैह इकदम समझी गया पई ऐह तां हीअरा। तिन्हे कम्हारे जो पुछ्या पई दस्स इस गटुए रा तुझ क्या मुअल लईणा। कम्हारे गलाया माराज इक रपइया मिअली जाओ तां ठीक आ। पारखी समझीग्या पई ए ना समझ आ। इसजो क्या पता पई ऐह चमकदी चीज हीअरा ई। तिन्हे वी चलाकी दस्सी होर कम्हारे जो गलाया पई बाअरा अन्ने लई ले। पर कम्हार इक रपईए पर अडुरा रहया। पारकीए वे सोचया पई ऐह कम्हार मूरख आ। तिन्हे कम्हारे जो गलाया पई तिस्स थोड़ीया देअरा बाद मुअड़ी आऊणा होर ताहलु तिसजो इक रपईया देणा।

✍ **रोशन लाल पराशर**

सैह कम्हार अपणे रस्ते गअरे सअणी चलदा रहया होर अग्गे तिसजो इक होअर माहणु मिलया। तिन्हे वी गअदे रे गअले च हीअरा लटकोइरा देक्खया। तिन्हे झअट कम्हारे ते तिस्स गटुए जो मंगया कने गलाया पई दस्स इसरे कितने पईसे लइणे।

कम्हारे तिसते वी इक रपईया ई मंगया। दूज्जे माहणुए जो परख थी कने समझ वी तिन्हे छोड़ चाअरे इक रपईया अपपीया गठ़ीया ते कड़अया होर कम्हारे जो पकड़ाई दितया, कने हीअरा लईलया। माराज थोअड़ीया देअरा बाद सैह पइले वाअला पारखी वी आई पुज्जया। तिन्हे कम्हारे ते तिस गटुए रे खातर पूच्छया। कम्हारे कुरते रीया सज्जीया पआसे खीअसे च हत्थ पाया होर इक रपईए रा नोअट पारखीए जो दस्सया कन्ने गलाया पई सैह गअटु इक माहणु इस रपईया रा लई गया। तिन्हे पारखीए बोलया, ओए मूरख कम्हार तैं लक्खा रा हीअरा इक रपईए च बेअची दितया। कम्हार बोलणे लगया, माराज मिंजो तां क्याअ गअटु होर क्याअ हीरा कुच्छ पता नीं था। होर पत्थर जाणी के इक रुपइया लआया पर तुसें तां जाणकीर थे। तुसें तां इक रुपईया देअणे च वी ना-नुकर करदे रहए होर मईगा हीअरा गवाईतया।

तां मूरख होर ना-समझ कुअण होया। वक्त म्हेशा छोअड़ होर सअई फैसला लईणे वाअलेयां रा सआथरेवाआं। बेवजह सोच बचारा च उलझणे वाला चाहे पारखी वी हो पर सअई फैसला नीं लईके म्हेशा क्हाटे च रहणे वाअला होया। होर क्हाटे री भरपाई करना फेअरी मुश्कल बणीं जवांई।

पारखीए कम्हारे जो गलाया पई ऐहड़ी भूअल पहले कदी नीं हुईरी थी इस पर कम्हारे वी बअड़ी अच्छी गल्ल बालई पई माराज, समझ इस खातर नी होअणी चैंहदी पई पुराणीयां पआड़ीयां पान्दे रहए ऐह तां आऊणे वाअले वक्ता री कदर करने होर समझने खातर समझा रा इस्तेमाल करने च ई समझदारी हो आई।

परम्परित बसोआ- गीत

चिड़ी ता लगी ओ माए बारसेड़े
रित जलधि बसंदा खेरी आई ओ ...
आया बसोआ ओ माए पंजे सत्ते
आया बसोए दा त्योहार ओ ...

इस गीत में एक बेटी जो अपने ससुराल में रह रही है , वह कह रही है की बाहर चिड़िया गाने लगी है और बसंत की ऋतु आ गई है अर्थात वैशाखी जिसे बसोआ के नाम से चंबा जनपद में मनाया जाता है यह त्योहार पांच सात दिनों में आने वाला है।

अम्मा जो बोल्ले ओ न रो बेदणी जो
मेरे भाऊए जो साद्दा भेज्जे ओ ...
भाई ता तेरा ओ धीए निक्का यांणा
बापू से बिरद सियाणा ओ ...

इन पंक्तियों में बेटी अपनी अम्मा को संबोधित करते हुए कहती है कि – हे मां इस त्यौहार के अवसर पर तुम अपनी बेटी की याद में मत रोना मेरे भाई को मुझे बुलाने के लिए भेज देना। तो मां प्रत्युत्तर में कहती है कि –बेटी तेरा भाई तो अभी छोटा है और मैं तेरे बापू को तुझे लाने के लिए भेजती तो वह वृद्ध हैं इसलिए मैं तुझे लाने के लिए किसे भेजूं।

मेरा न साद्दा न पुजाऊ ओ
धीए अप्पू आणा अप्पू जाणा ओ ...

यहां मां कहती है की बेटी इसलिए मेरी ओर से न तो तुम्हें कोई लिवाने के लिए है और न ही पहुंचाने के लिए । इसलिए बेटी तुम खुद ही आ जाना और चली जाना ।

धारां नगारां ओ माए हियूएं भरियां
ओ नेला मा फुल्ले बरसेड़ी ओ ।।
सबना दी धियां ओ माए नेड़े नेड़े
हाऊं कजो दित्ती नदी पारे ओ ...

यहां बेटी मां को उलाहना देती हुई कहती है कि – अम्मा यहां तो धारों पर और नगर में अभी तक बर्फ है और नालों में फूल फूलने शुरू हो गए हैं। बाकी सब की बेटियां तो नजदीक नजदीक ब्याही गई है परंतु आपने मुझे इतने दूर नदी के पार क्यों ब्याह दिया।

नदी ता जली ओ माए गेरे गेरे
कियां लंघणा मूं नदी पारा ओ ...

इन पंक्तियों में बेटी मां को कहती है कि – अम्मा यह नदी भी बहुत लंबी चौड़ी है मैंने कैसे इसे पार करना!

ओ बारहा ता बरेयां सस्सु साद्दा आया
मिंजो पिये जो भेज्जी दियें ओ ..
बारहा ता बरिएं सस्सु साद्दा आया
मूं ता पिए जो चली जाणा ओ ..

इन पंक्तियों में बेटी अपनी सास से कहती है कि – ए सासू मां बारह वर्षों के बाद मुझे बुलाने के लिए साद्दा (बुलाने वाला)आया है मैं मायके जाना चाहती हूं आप मुझे मायके भेज दीजिए।

घड़े घड़ोलु ओ नूएं खाली होए
उना भरी तू पिए जायां ओ ..

जब वह अपनी सास से मायके जाने की गुहार लगाती है तो सास कहती है कि – बहू

✍ **अशोक दर्द**

सारे घड़े-घड़ोलू पानी के खाली पड़े हुए हैं पहले तू उन्हें भर दे फिर चले जाना।

घड़े घड़ोलु ओ सस्सु भरी छोड़े
मिंजो पिए जो भेजी दिएं ओ ...

इन पंक्तियों में नायिका अपनी सास को कहती है कि– मैंने पानी के सब घड़े भर दिए हैं अब तो आप मुझे मायके भेज दीजिए।

छड़ छड़ोलु ओ नूएं ऊना पूणी
ऊना कत्ती तू पिए जायां ओ ...

अब सास और बहाना ढूंढती है और कहती है कि – अभी बहुत सी ऊन कातने को है पहले तू उस ऊन को कात दे फिर मायके चले जाना।

छड़ छड़ोलु ओ सस्सु कत्ती छोड़े
मिंजो पिए दा चा ओ ...

फिर नायिका मायके जाने की जल्दी में वह सारी ऊन भी कात देती है और सास को कहती है कि मैंने ऊन भी कात दी है, अब मुझे आप मायके जाने दीजिए मुझे मायके जाने का बहुत चाव है।

चलें ता भाईया बाहर बिया बौंदे
सुरैहड़ी रा दुख सुख लांदे ओ ...
सारी दिहाड़ी ओ भाऊआ गोरू चारे
ओ दिल नीयों बोल्ले घरे जाणा ओ ...

इन पंक्तियों में जब भाई बहन दोनों मिलते हैं तो बहन भाई को कहती है कि भाई चल बाहर बरामदे में बैठकर ससुराल का सुख-दुख लगाते हैं मैं सारा दिन पशु चराती हूं और शाम को घर आने को दिल नहीं करता है ।

पिंदड़ी ता पिंदड़ी ओ माए अप्पू खाए
ओ खोड़ा रे पत्ते मिंजो दित्ते ओ ...
बबरू ता बबरू ओ माए अप्पू खाए
ओ जौआ री रोटी मिंजो दित्ती ओ ...

मेरी सास पिंदड़ी (एक विशेष प्रकार का पकवान त्योहार के अवसर पर बनाया जाता है) खुद खा जाती है और मुझे अखरोट के पत्ते देती है। खुद बबरू खा जाती है और जौ की रोटी मुझे खाने को देती है।

ईयो ता गल्ल ओ भाईया तेरे कन्ने लाई
मेरी अम्मा कन्ने मत लान्दा ओ ...

फिर बहन कहती है भाई यह बात मैंने तेरे साथ कही है तू अम्मा के साथ इस बात को कभी मत बताना।

छम्मे ता नैणे भैण रोई ओ
हिट्कुए लाई भाई रोया ओ ...

इस तरह जब बहन उसे अपने ससुराल के दुख सुनाती है और मां से ना कहने के लिए कहती है तो दोनों बहन भाई फूट-फूटकर रोने लगते हैं। बहन आंखें भर भर कर रोती है और भाई हिचकियां ले लेकर रोता है।

मरी ता करी चिड़ी बणली
ओ डालिया चुरभुर लाली ओ ....।।

अंतिम पंक्तियों में बहन भाई से कहती है कि मैं मरकर चिड़िया बनूंगी और तेरे आंगन की डाली पर बैठकर चुरभुर लगाऊंगी यानी मर कर भी मैं तेरे आंगन से दूर नहीं जाना चाहूंगी।

कबतां

इंया न डरा करो

सच पाल

इक्सीवीं सदी री बीमारी
फैला गई दुनिया दे महामारी।
बुहान ते चलाया विषाणु
चीन रा ये परवाणु
जैविक हथियार ऐ खतरनाक
करी दा इने सत्यानाश।
ओरे नी आणा
पोरे नी जाणा
डरी-डरी स्कूल भी बन्द
माठे-बेटी घर दे बन्द।
छल उई गा करोना
सभी के आओ रोणा।
डर इतणा
जीऊणा हुई गा मुश्किल
सभी रा डरो मन
समाज दे डर उई गा।
जीणा भी सीखणा
कोविड-19 साथे
इंया न डरा करो
डरी-डरी खत्म
लोग उई जाणे
घरैया राखी राखो
अपणा मनोबल बढ़ाओ।

बहुत बुरा आखिरी पहर

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

इक्क बुड्डा बड़ा सियाणा।
था सैह् इकसा हाखी था काणा।।
नजर थी तां बड़ी कमजोर।
केई कष्ट भी थे तिसजो होर।।
मुंह पोपला दंदा-बगैर।
चलदे न थे 'कर कनें पैर।।'
दुःखे आला गीत था गांदा।
उठ्दा-उठ्दा पेई जांदा।।
कन्नां मंझ था घट सणोंदा।
दुःखे सुणाई भरूड़िया रोंदा।।
इक दिन मैं पुच्छी बैट्ठा।
बाबा। कैंह रूस्सी बैट्ठा ?
बोलया बाबा हाखीं पूंह्जी।
गुआची हुण जंदरे दी कूंजी।।
अज्ज न मेरा बासदा कोई।
ले हुण तां मैं, सब्बो रोई।।
बहुत बुरा ऐ आखिरी पहर।
व्यापे न कुसजो ऐसा कहर।।
बाबे दा ऐह सारा दुःख सुणी।
मैं भी अपणा चादर बुणी।।

निक्की कथां

सुखणा

रत्न चन्द निर्झर

घरे ते आमां रा फोन था, राजेश बेटा अगले हफ्ते तुआरा ध्याड़े घरा जरूर लोड़ी आई, तूजो देक्खी रे सेर मिली रे साला ते जादा हुई गेया। ऐस बारी मैं सत्यनारायण री कथा रा हयाव रखी रा। नी चांहदे की राजेश सनीयरा दपेहरा बाद गरांवा रे पासे चली पेया। तेसरा गरांव सड़का ते 10 किलो मीटर दूर रिसिपा पर बसी रा हा। होर तेथी पूजने को पैदल ही हाडणा पैहा था। न्हेरा हुणे ते पैहले से घरा पूजी गेया। राजेशा जो घरा आई देखी के माऊ री ख़ुशी रा कोई ठ्काणा नी रेहया। जमीन जदैद बंटणे दे बाद राजेशा रा गरांवा औणा कम्म हे होई गईरार था।

परार की साल छोटे भाऊये खे बमार हुणे पर आमे तेसर छोड़ राजी होणे पर सुखना मनी री थी। छोटे भाऊ रे ठीक होणे पर आमे ये घरा कारज ता रखी रा : राती ब्याली खाणे ते बाद राजेशा रा बहाण सोगी वाले कमरे लगाई दिती रा था। सोणे ते पैहले से पैशाब करणे टायलेटा री तरफा जांदा लागी रा था। तैभे तेस रे काना होठी भरजाई री गल्ला सुणाई दिती। इन्हां स्याणेया री क्लास नितेया जाये-हरि ता इन्हा जो कोई कम कार ता हाई नी जेबे जिऊ कितेया सुखणा सुखी जेंहा ए, खरया ता आंसा जो हे करणा पौणा न, इन्हां रा क्या जाणा। राजेशा रे कदम जिहां जमीना के जड़ हुई गये थे।

कन्या साक्षात देवी असो

रमेश कुमार वर्मा

एकी बारे नारद जी री तीव्र इच्छा ओई कै गोकुल जाई रो बालकृष्णा रे दर्शन किंए जाओ। वल वीणा बजांदे ओए नंद बाबा जी रे घर पहुंचे। झनिये पलंगा पाए मस्ती भरी नींद ले रहे बालकृष्णा री सुन्दर छवि देखी, तो सै भाव विभोर ओई गोए और दोनो हाथ जोड़ो रो मस्तक झुकाई रो प्रणाम किया। नंद जी यह दृश्य देखी रो हतप्रभ रोई गोए। नारद जी बोले इना खै साधारण बालक मत समझना। शिव औ ब्रह्मा भी इना सई सदा प्रेम रखेंगे। आगे चली रो ये दिव्य बालक ईशी लीलाएं करेंगा कि तीनों लोक चमतकृत हो उठेंगे। तुमा रा कुल अमर ओई जायेगा। आर्शीबाद दयी रो नारद जी लौटने लगे। नंद बाबा के मित्र भानुजी ने ये दृश्य देखा, तो उनकी इच्छा हुई कि वल भी आपने पुत्र व पुत्री को देवर्षि नारद रा आशीर्वाद दिलाएं। नारद इनो रे घरे गौए, तो भानु जी अपने पुत्रा खै इना काए लाए। नारद जी ने पुत्र आशीर्वाद दिया औ बाले कन्या रे भी दर्शन कराओ। वह उन्हें कमरे में लेई गौए। छोटी जी बच्ची रा अदभुत रूप देखी रो देवर्षि चकित रोई गौए। दर्शन करदे ही सै समझी गौए की ये कन्या साक्षात देवी स्वरूप असो। वो भानु जी से बोले जिस घर में कन्या रा प्रेमपूर्वक पालन-पोषण किया जाओ आए, सै घर सदैव सुख-समृद्धि सई परिपूर्ण रो आए। सभी सिद्धियों सहित लक्ष्मी वहां निवास करो आए। कन्या साक्षात देवी ओ आए।

जिलों में धूमधाम से मनाया गया हिमाचल दिवस समारोह

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर की अध्यक्षता में गत दिनों जिला मण्डी के पद्धर में हिमाचल दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पद्धर में 74वें हिमाचल दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को इस ऐतिहासिक दिवस की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर विभिन्न जिलों में भी 74वें हिमाचल दिवस का जिला स्तरीय आयोजन किया गया।

शिमला : ऐतिहासिक रिज मैदान पर जिला स्तरीय 74वां हिमाचल दिवस का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता शहरी विकास, आवास नगर नियोजन, विधि, सहकारिता एवं संसदीय कार्य मंत्री श्री सुरेश भारद्वाज ने की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत लगभग शिमला 948 करोड़ से अधिक की 187 परियोजनाओं का निर्माण कार्य प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त 600 करोड़ रुपए की लागत से विभिन्न परियोजनाओं का सक्रिय कार्यान्वयन किया जा रहा है, जिसके तहत पार्किंग कॉम्पलैक्स, एस्कलेटर, लिफ्ट, सोलर पैनल, ई-टॉयलेट आदि का निर्माण किया जा रहा है।

बिलासपुर : जिला में हिमाचल दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए खाद्य नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री राजिन्द्र गर्ग ने कहा कि प्रदेश के प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर अनछुए क्षेत्रों को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने के लिए नई राहें-नई मंजिलें योजना आरम्भ की गई है। योजना के अन्तर्गत अब तक 150 करोड़ की राशि स्वीकृत की गई है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री आवास योजना के तहत 4,417 मकान निर्मित किए जा चुके हैं।

सिरमौर : हिमाचल दिवस पर नाहन के ऐतिहासिक चौगान मैदान में आयोजित जिला स्तरीय समारोह में ऊर्जा मंत्री श्री सुखराम चौधरी ने बताया कि जिला सिरमौर में पांवटा साहिब- शिलाई-गुम्मा 707 राष्ट्रीय उच्च मार्ग के निर्माण पर 1251 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे है। लम्बे समय से मांग की जा रही इस सड़क के बनने से जिलावासियों को बेहतर सुविधा मिलेगी।

कांगड़ा : धर्मशाला के पुलिस मैदान में विधानसभा अध्यक्ष श्री विपिन सिंह परमार ने हिमाचल दिवस के अवसर पर राष्ट्र ध्वज फहराया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश विधान सभा को देश में पहली ई-विधानसभा होने का गौरव प्राप्त हुआ है। प्रदेश की सभी 68 विधानसभा क्षेत्रों को ई-विधानसभा प्रबंधन प्रणाली से जोड़कर इसे प्रभावशाली ढंग से लागू किया जा रहा है। विधानसभा के कार्य का डिजिटलीकरण कर दिया गया है और विधानसभा के कार्यों को कागज रहित बनाने की दिशा में सफलता प्राप्त हुई है। हिमाचल प्रदेश विधान सभा ई-विधान प्रणाली को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने वाली भारत की प्रथम उच्च-तकनीक युक्त कागज रहित विधानसभा है।

हमीरपुर : जिला स्तरीय समारोह में ग्रामीण विकास, पंचायतीराज, कृषि, पशुपालन और मत्स्य पालन मंत्री श्री वीरेंद्र कंवर ने कहा कि हिमाचल की गिनती अब खुशहाल एवं प्रगतिशील राज्यों की श्रेणी में की जाती है। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार के तीन वर्ष के कार्यकाल के दौरान प्रदेश सरकार 'सबका साथ-सबका विकास और सबका विश्वास' के मूल मंत्र को समक्ष रखकर कार्य कर रही है। जनमंच, मुख्यमंत्री सेवा संकल्प हेल्पलाइन-1100 और प्रगति पोर्टल व 'माई गोव' जैसे नवाचार प्रयास, इस दिशा में उठाए गए महत्त्वपूर्ण कदम हैं।

कुल्लू : ऐतिहासिक ढालपुर मैदान में हिमाचल दिवस के अवसर पर शिक्षा व कला, भाषा एवं संस्कृति मंत्री श्री गोविंद सिंह ठाकुर ने कहा कि आयुष्मान भारत योजना के तहत प्रदेश में अब तक 3 लाख 34 हजार परिवारों ने गोल्डन कार्ड बनाए हैं। इस योजना के तहत अब तक 77 हजार 549 लाभार्थियों को लगभग 81 करोड़ रुपये की निःशुल्क इलाज की सुविधा प्रदान की गई है। आयुष्मान भारत में कवर नहीं होने वाले प्रदेशवासियों के लिए प्रथम जनवरी, 2019 से हिमकेयर योजना आरम्भ की है जिसके तहत अब तक 4 लाख 61 हजार परिवार पंजीकृत हैं।

सोलन : उद्योग, परिवहन तथा श्रम एवं रोजगार मंत्री श्री बिक्रम सिंह ठाकुर ने सोलन में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि प्रदेश में बेहतर निवेश आकर्षित करने के लिए धर्मशाला में आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर्स मीट में लगभग 97000 करोड़ निवेश के 703 समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित हुए। उन्होंने कहा कि इस निवेश में से 13,656 करोड़ की परियोजनाओं का पहला ग्राउंड ब्रेकिंग समारोह आयोजित कर परियोजनाओं का 80 प्रतिशत कार्य पूर्ण किया जा चुका है।

किन्नौर : जिला स्तरीय हिमाचल दिवस समारोह किन्नौर जिला के मुख्यालय रिकांग पिओ के रामलीला मैदान में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. राजीव सैजल ने कहा कि आज हिमाचल प्रदेश खुशहाल एवं प्रगतिशील राज्य की श्रेणी में गिना जाता है। उन्होंने कहा कि भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा आरंभ की गई प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना प्रदेश वासियों के लिए वरदान साबित हुई हैं और इसके माध्यम से गांव-गांव में सड़कें पहुंची है। रोहतांग टनल भी वाजपेयी जी की ही दूरदर्शी सोच की देन है।

चम्बा : विधानसभा उपाध्यक्ष डॉ. हंसराज ने हिमाचल दिवस पर आयोजित समारोह में कहा कि हिमाचल प्रदेश को एक अलग राज्य का दर्जा दिलवाने में चंबा जिला के लोगों की भी अहम भागीदारी रही है। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार ने भी अपने इस कार्यकाल के दौरान कई नए मील के पत्थर स्थापित करके प्रदेश को एक नई दिशा दी है। उन्होंने कहा कि हिमाचल की कोख ने कई परम वीरों को जन्म दिया है जिसका हम सब को गर्व है।

राज्यपाल ने किया शिव सिंह चौहान की पुस्तक का विमोचन

राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने गत दिनों राजभवन शिमला में साहित्यकार, समाजसेवी और सूचना एवं जन संपर्क विभाग से सेवानिवृत्त अधिकारी शिव सिंह चौहान द्वारा लिखित पुस्तक- हिमाचल प्रदेश के पांच सपूत का विमोचन किया। यह पुस्तक हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्रियों के राज्य के विकास में योगदान पर केंद्रित है।

राज्यपाल ने लेखन के क्षेत्र में शिव सिंह चौहान के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यह वर्ष हम हिमाचल प्रदेश के स्वर्ण जयंती पूर्ण राज्यत्व वर्ष के रूप में भी मना रहे हैं। हमारे नेतृत्व ने प्रदेश को किस तरह आगे बढ़ाया और विकास के लिए उनका क्या दृष्टिकोण था, यह महत्त्वपूर्ण है। लेखक ने सरकार के साथ काम करते हुए अपने अनुभवों को पुस्तक के माध्यम से पाठकों तक लाया है। उन्होंने कहा कि भावी पीढ़ी के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि वे अपने अतीत के दौर को भी समझें।

इस मौके पर, शिव सिंह चौहान ने राज्यपाल को अपनी पुस्तकों का संग्रह भी भेंट किया। इनमें ममता के मंदार, कतरन से परिवर्तित होती नारी, एक सफल राजनेता और हिमाचली शक्ति-पीठ शामिल हैं। सोलन जिले से संबंधित 90 वर्षीय शिव सिंह चौहान ने पुस्तक के माध्यम से प्रदेश में हुए राजनैतिक बदलाव, आर्थिक परिवर्तन और स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क निर्माण, कृषि एवं बागबानी, औद्योगिकीकरण इत्यादि क्षेत्रों में हुए विकास को पुस्तक में स्थान दिया है। पूर्व इंजीनियर श्याम लाल शर्मा भी इस अवसर पर उपस्थित थे। उन्होंने भी राज्यपाल से अपने अनुभव साझा किए। शिव सिंह चौहान के पुत्र यादवेंद्र सिंह चौहान, जो राज्य सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग से संयुक्त निदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं, भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

द्रंग क्षेत्र में तीन वर्षों में 270 करोड़ की परियोजनाएं कार्यान्वित

(पृष्ठ एक का शेष)

पाठशाला सुद्धर में 1.26 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित होने वाली विज्ञान प्रयोगशाला, ग्राम पंचायत बाथड़ी के जुलंग संगलवान से बाथड़ी और आस-पास के गांवों को नल द्वारा जल उपलब्ध करवाने के लिए 1.16 करोड़ की लागत से पूरी होने वाली जलापूर्ति योजना के सुधारीकरण एवं संवर्धन और हरडगलू में 38 लाख की लागत से निर्मित होने वाले मुख्यमंत्री लोक भवन की आधारशिलाएं रखीं। उन्होंने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना-2 के अन्तर्गत क्रमशः 25.19 करोड़ और 7.09 करोड़ की लागत से निर्मित होने वाली घटासनी-बरोट सड़क और कटिंढी से काशला सड़क के स्तरोन्यन का भूमि पूजन भी किया।

इसके उपरान्त, मुख्यमंत्री ने हरडगलू में जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि उन्होंने द्रंग विधानसभा क्षेत्र में लगभग 50 करोड़ की विकासात्मक परियोजनाओं के उद्घाटन व शिलान्यास किए हैं। पिछले तीन वर्षों में लोक निर्माण विभाग ने इस विधानसभा क्षेत्र में 250 करोड़ की विकासात्मक परियोजनाओं जबकि 19 करोड़ की 16 आईपीएच योजनाओं का क्रियान्वयन किया है। इस अवसर पर द्रंग मण्डल भाजपा ने मुख्यमंत्री को 'मुख्यमंत्री राहत कोष' के लिए एक लाख का चौक भेंट किया।

मुख्यमंत्री ने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र बाड़ीधार तथा क्षेत्र के अन्य स्वास्थ्य उप केन्द्रों के लिए एक करोड़ और मुख्यमंत्री ग्राम पथ योजना के अन्तर्गत पांच सड़कों के निर्माण के लिए 50 लाख देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि पन्जोरी नाला जलापूर्ति योजना के लिए अतिरिक्त धनराशि उपलब्ध करवाई जाएगी और आईपीएच निरीक्षण कुटीर पद्धर में अतिरिक्त दो कमरों का निर्माण किया जाएगा। सुई पंचायत में हेलीपैड का निर्माण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि पद्धर में हिमाचल पथ परिवहन निगम का पास काउंटर खोला जाएगा और विधानसभा क्षेत्र में दो अतिरिक्त मिनी बसें चलाई जाएंगी। उन्होंने कहा कि पद्धर में सिविल जज कोर्ट खोलने के भी प्रयास किए जाएंगे। इससे पूर्व, मुख्यमंत्री ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला पद्धर में टिंकरिंग विज्ञान प्रयोगशाला का शुभारम्भ किया।

आओ 'चलो चम्बा'

(पृष्ठ एक का शेष)

और कुजिनज (व्यंजन) पर आधारित है।

'चलो चम्बा' अभियान का उद्देश्य जिला में पर्यटन संबंधी विभिन्न गतिविधियों का विस्तार कर यहां के स्थानीय लोगों को उनके घर-द्वार पर रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाना है। इससे चम्बा जिले में आर्थिक आत्मनिर्भरता के एक नए अध्याय की शुरूआत होगी और यह जिले के पर्यटन परिदृश्य को नए आयाम देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस अभियान से जिले में साहसिक और प्राकृतिक पर्यटन के नए मार्ग खुलेंगे। चम्बा के पारम्परिक व बेमिसाल हस्तशिल्प उत्पादों से न केवल पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा बल्कि रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और आर्थिकी भी सुदृढ़ होगी। इससे युवाओं को रोजगार और स्वरोजगार के पर्याप्त अवसर प्रदान करने में सहयोग मिलेगा।

प्रदेश में पर्यटन विकास की अपार सम्भावनाएं विद्यमान हैं जिनका विकास करने के लिए वर्तमान सरकार ने अनेक योजनाएं व कार्यक्रम लागू किये है। सरकार के तीन सालों के कार्यकाल में पैराग्लाइडिंग, स्कीइंग, इको पर्यटन व ट्रैकिंग, जलक्रीड़ा जैसी साहसिक पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा दिया गया है। बीड़-बिलिंग, चांशल, जंजैहली, पौंग, पंडोह, लारजी व तत्तापानी जैसे स्थानों पर पर्यटन संबंधी अधोसंरचना विकसित करने के लिए अनेक पग उठाये हैं, जिसके आशातीत परिणाम आ रहे है। अटल टनल रोहतांग के प्रधानमंत्री द्वारा लोकार्पण ने जनजातीय जिला लाहुल-स्पीति के साल भर देश के अन्य भागों से जुड़े रहने को सुनिश्चित कर इस पर्यटन सम्भावनाओं से भरे क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियों को एक नई राह दिखाई है।

वैश्विक महामारी कोरोना का दंश समस्त विश्व ने झेला है, परन्तु यदि सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों की बात की जाए तो पर्यटन क्षेत्र का नाम सबसे ऊपर होगा।

प्रदेश का पर्यटन उद्योग भी इससे अछूता नहीं है, इसलिए वित्त वर्ष 2021-22 के बजट में प्रदेश सरकार ने पर्यटन को कोविड-19 से पूर्व की स्थिति में लाने के लिए मल्टी मीडिया पब्लिसिटी अभियान की घोषणा की है जिससे स्थानीय पर्यटन आकर्षणों पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। इसके अतिरिक्त 218 करोड़ की लागत वाली विभिन्न परियोजनाओं जिनमें बड़ागांव (मनाली) व जंजैहली में सांस्कृतिक केंद्र; मण्डी, धर्मशाला व क्यारीघाट में कन्वेंशन केंद्र; चामुंडा मंदिर काँगड़ा, बेंटनी कॉसल शिमला का जीर्णोद्धार; शिमला, कांगनीधार, रामपुर, बद्दी में हेलीपोर्ट आदि को इस वित्त वर्ष में लोगों को समर्पित किया जायेगा।

प्रदेश में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया 74वां .....

(पृष्ठ एक का शेष)

निःशुल्क गैस कुनेक्शन प्रदान किए गए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू की गई आयुष्मान भारत योजना के अन्तर्गत प्रदेश के 3.34 लाख परिवारों को गोल्डन कार्ड प्रदान किए गए हैं। प्रदेश सरकार ने राज्य के 18 से 45 वर्ष की आयु के युवाओं के लिए मुख्यमंत्री स्वावलम्बन योजना शुरू की है। जल जीवन मिशन के अन्तर्गत वर्ष 2024 तक देश भर में सभी ग्रामीण घरों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाने का लक्ष्य रखा गया है और प्रदेश इस लक्ष्य को जुलाई, 2022 तक पूरा करने के लिए प्रयासरत है। श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अन्तर्गत वर्ष 2020-21 के दौरान 1,915 किलोमीटर लम्बी 283 सड़कों का निर्माण किया गया है।

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के तहत राज्य में 5,595 हेक्टेयर में प्राकृतिक खेती की जा रही है और लगभग एक लाख किसानों ने इसे अपनाया है। मुख्यमंत्री खेत संरक्षण योजना के अंतर्गत 3,873 किसानों को सोलर और कांटेदार-तार बाड़ के माध्यम से 105 करोड़ रुपये का लाभ प्रदान किया गया है। 1134 करोड़ रुपये की हिमाचल प्रदेश बागबानी विकास परियोजना और 1000 करोड़ रुपये की शिवा परियोजना प्रदेश में कार्यान्ति की जा रही है। उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया कोविड-19 से पीड़ित है और हमारा राज्य भी कोई अपवाद नहीं है। इस महामारी की चुनौतियों के बावजूद लोगों के समर्थन से सरकार ने बुनियादी सुविधाओं को सुचारू रूप से विनियमित करके राज्य की अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। उन्होंने लोगों से भी आग्रह किया कि वे दवाई भी-कड़ाई भी के मंत्र के साथ टीकाकरण अभियान में शामिल हों। मंडी जिले में विकास का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि जिला का संतुलित और तेज विकास सुनिश्चित किया जा रहा है। राज्य सरकार ने जिले में न केवल मेडिकल यूनिवर्सिटी और क्लस्टर यूनिवर्सिटी की स्थापना की है, बल्कि जिले में एक आईआईटी भी हैं। राज्य सरकार जिले में सड़कों और पुलों के निर्माण पर 1000 करोड़ रुपये खर्च कर रही है। इतना ही नहीं, सरकार ने जनधन योजना के तहत जिले के लोगों को 55,000 से अधिक मुफ्त गैस कुनेक्शन भी प्रदान किए हैं।

मुख्यमंत्री ने इस दौरान मार्च पास्ट में भाग लेने वाली टुकड़ी के टीम लीडरों को सम्मानित किया। उन्होंने लोगों को कोविड के खिलाफ लड़ाई लड़ने और प्रदेश को प्रगति व खुशहाली के पथ पर आगे ले जाने के लिए सामूहिक प्रयास करने की शपथ भी दिलाई। मुख्यमंत्री ने पद्धर में निर्माणाधीन उपकेन्द्र अग्निशमन का उद्घाटन भी किया।

वैक्सीन लगवाने के लिए.....

(पृष्ठ एक का शेष)

मार्गदर्शन किया जाना चाहिए और स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा उन्हें थर्मामीटर, ऑक्सीमीटर और दवाइयां उपलब्ध करवाई जानी चाहिए। नए रोगियों की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए, टांडा मेडिकल कॉलेज में बिस्तरों की क्षमता बढ़ाई जानी चाहिए।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि पंचायती राज संस्थानों के नवनिर्वाचित सदस्यों को इस खतरनाक वायरस से निपटने में स्थानीय लोगों की सहायता के लिए सक्रिय रूप से लगातार काम करना चाहिए। उन्हें समय-समय पर सरकार द्वारा जारी किए गए मानक संचालन प्रक्रियाओं का सख्ती से पालन करने के लिए लोगों को जागरूक करना चाहिए।

जनप्रतिनिधियों द्वारा लोगों को प्रोत्साहित करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि लोग उचित तरीके से फेस मास्क पहनें और सामाजिक दूरी का पालन करते हुए सैनिटाइजर का प्रयोग करें और अत्यधिक आवश्यक होने पर ही सार्वजनिक स्थानों पर जाएं। उन्होंने कहा कि कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में राज्य में आवश्यक उपकरणों, वस्तुओं, दवाओं और सुविधाओं की कोई कमी नहीं है। राज्य में पीपीई किट, वेंटिलेटर और अन्य संबंधित वस्तुओं की पर्याप्त संख्या है।

• • •

प्रकाशक एवं प्रधान सम्पादकः हरबंस सिंह ब्रसकोन, निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हि.प्र. शिमला-171002, मुद्रकः रीमा कश्यप, नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, शिमला-171005, फोनः 2830381—PBX.A29,वरिष्ठ सम्पादकः वेद प्रकाश, सम्पादकः नर्बदा कंवर कार्यालयः हि.प्र. मुद्रणालय परिसर, शिमला-171005, फोनः 2633145 व फैक्सः 2830374, ई-मेलः girirajhp@gmail.com. OR girirajweekly 1978 @yahoo.co. in प्राप्ति स्थानः गिरिराज कार्यालय। (गिरिराज साप्ताहिक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं)